झांसी की रानी

(ऐतिहासिक नाटक)

वृन्दावनलाल वर्मा, एडवोकेट

(लेखक—मृगनयनी, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, कचनार, हंस-मयूर, टूटे कांटे, मुसाहिबजू, लगन, विराटा की पद्मिनी, सोना, संगम, प्रेम की भेंट, माधवजी सिंधिया, गढ़कुंडार, पूर्व की ओर आदि)

मयूर प्रकाशन,

झांसी • दिल्ली • ग्वालियर • जबलपुर

भूमिका

मेरा 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' उपन्यास पाठक पाठिकाओं को रुचा। अनेक स्नेही पाठकों ने लक्ष्मीबाई पर नाटक लिखने का आग्रह किया। 'झांसी की रानी नाटक' उसी आग्रह का फल है।

वृन्दावनलाल वर्मा

मङ्गलाचरण

अमर रहे झांसी की रानी,

जिये सदा वह अजर कहानी;

चमत्कार से पूर्ण हमारा,

अमर रहे भारत का पानी। *

---

* मालकोस राग मे अच्छा रहेगा। ताल तिताला।

नाटक के पात्र

स्त्री—

रानी लक्ष्मीबाई
मुन्दर
सुन्दर
काशीबाई
राधारानी
मोतीबाई
जूही
झलकारी
अन्य स्त्रियां

पुरुष—

राजा गङ्गाधरराव
बाजीराव द्वितीय (अन्तिम पेशवा)
नाना धोंडूपन्त
रावसाहब
तात्या टोपी
नाना भोपटकर
लाला भाऊ
दीवान जवाहरसिंह
दीवान रघुनाथसिंह

दीवान दूल्हाजू

रामचन्द्र देशमुख

खुदाबख्श

गुलमुहम्मद

नवाब अलीबहादुर

पीरअली

गुलाम गौसखां

बाबा गङ्गादास

जनरल रोज़

ब्रिगेडियर स्टुअर्ट

पूरन

सागरसिंह

राजा, नवाब, सैनिक, पारिषद, पहरेवाले, किसान, मजदूर इत्यादि।

झांसी की रानी

नाटक

पहला अंक

पहला दृश्य

[गंगा के किनारे, बिठूर से बाहर, एक झाड़ी के बीच में रेतीला टीला। टीले के आगे, समानान्तर गड़े हुये दो बांसों के बीच में टङ्गी हुई एक चौकोनी तख्ती है जिसमें वृत्तों के भीतर वृत्त हैं। बिलकुल भीतरी वृत्त काले रङ्ग का, जिसका व्यास एक इञ्च है। ये सब वृत्त बन्दूक से निशाना लगाने की बुलजरी* और विविध रङ्ग के हैं। नेपथ्य में घोड़ों की टापों की आवाज़ होती है और घोड़ों पर से उतरने का शब्द। दो लड़के नाना धोंडूपन्त १६ साल और राव १४ साल घुड़सवारों के वेश में आते हैं। साथ ही एक लड़की, मनूबाई, आयु १२ वर्ष से कुछ कम, घुड़सवार के वेश में आती है। नाना और राव भाई भाई हैं। दोनों सुन्दर आकृति वाले। नाना बाजीराव द्वितीय का गोद लिया हुआ लड़का है जो अंग्रेज़ों की ईस्ट इण्डिया कम्पनी से पेन्सन पाकर बिठूर में

*Bull's eye,

रहते हैं। मनूबाई का रंग गोरा, चेहरा कुछ लम्बा, परन्तु बहुत सुन्दर, आँखें बड़ी, शरीर छरहरा। यह मोरोपन्त तांबे की पुत्री है जो बाजीराव पेशवा का एक कर्मचारी है। ये तीनों कमर के पीछे तोड़ेदार बन्दूक बांधे हैं। मनू और नाना बुलजरी के कुछ निकट पहुँचते हैं। राव थोड़ा पीछे रह जाता है। समय सन्ध्या से पूर्व।

राव—(बुलजरी पर ध्यान जमाते हुए) मेरे लिये निशाना जरा दूर पड़ता है।

नाना—कुछ मेरे लिये भी।

मनू—तो बन्दूकों को बुलजरी पर ही क्यों नहीं जा टिकाते ?

नाना—अच्छा यहीं से सही। मनू, पहले तुम।

मनू—कदापि नहीं। पहले नाना साहब, बड़े भैया, फिर राव साहब, छोटे भैया। सबसे पीछे उनकी बहिन, मनू।

नाना—अच्छा तो लो।

(नाना बन्दूक चलाता है निशाना चूक जाता है)

चूक गया। फिर देखूंगा राव तुम चलाओ। (राव बन्दूक चलाता है। चूकता है। नाना की भी अपेक्षा राव की गोली बुलजरीसे दूर लगती है।)

मनू—ह ! ह !! ह !!! क्या लक्ष्य बेधा है ! वाह राव भैया !!

नाना—अब की तुम्हारी बारी है। जाओ नहीं लगेगी, किसी भी चक्कर में नहीं लगेगी।

(मनू साधकर बन्दूक चलाती है। ठीक बीच वाले चक्र में जो काला है, गोली छेद कर देती है)

नाना—रहा तो, पर मनू, यह तो अन्धे के हाथ बटेर लगी है।

मनू—हुं ....

नाना—अच्छा, अबकी बार लाल रंग वाले चक्कर में, दाहिनी तरफ, बीचों बीच निशाना लगाओ तब जानूं।

मनू—हुं।........ देखती हूं।

(मनू बन्दूक भर कर निशाना साधती है)

राव—लाल वाले चक्कर में नहीं, हरे वाले में लगाओ। केन्द्र से ठीक नीचे।

नाना—नहीं दाईं बगल।

मनू—(ओठों की दाहिनी कोर को जरा सा दबाकर) हरे रंग वाले चक्कर में, केन्द्र से दाईं ओर! और कुछ?..................

राव—यही सही।

(मनू बन्दूक को संभालती है)

नाना—न, न। हरे रङ्ग वाले में नहीं, लाल वाले में, बाईं ओर।

मनू—(बन्दूक को निशाने से हटाकर) अरे! यह क्या?

राव—मैं जो कहूं वह करो। न हरा, न लाल। नीले रङ्ग वाले चक्कर में। केन्द्र से दाईं ओर। हा।

मनू—(बन्दूक के कुन्दे को अपने पैर पर टिकाकर) पहले एक बार आपस में तै कर लो।

राव—अच्छा, अच्छा, नाना ने जो कहा वही पक्का रहा।

(मनू नाना के बतलाये हुये वृत्त में निशाना लगा देती है)

मनू—यह भी अटकल पच्चू था? क्यों?

नाना—ओहो, बड़ा नाहर मार दिया न!

मनू—नाहर दिखलाई तो पड़े। उसका मारना कौन सा कठिन काम है? पर यहां नाहर है कहां? नाहर तो दक्षिण और विन्ध्यखंड के जङ्गलों में सुनते है।

राव—तुम नाहर से डरोगी नहीं मनू? वह हाथी को पछाड़ देता है।

मनू—असम्भव।

राव—तुमने देखा है?

मनू—और तुमने नाहर को हाथी पछाड़ते देखा है?

नाना—न तुमने देखा है और न राव ने। इतनी जल्दी क्रोध नहीं करना चाहिये। (नेपथ्य में घोड़ों की टापों और हिनहिनाहट का शब्द होता है) चलो अब घुडदौड़ करें। संध्या के पहले घर पहुंचना है।

मनू—दादा, क्या भाग्य में दूर और होना भी लिखा रहता है ? यदि ऐसा है तो [illegible] होंगे और [illegible] ।

मोरोपन्त—अब नाना का जी कैसा है ?

मनू—अच्छा है । दादा, जब स्यार पागल हो जाता है, तब क्या वह भाग्य से ही पागल होता है ?

बाजीराव—(हँसकर) यह लड़की किसी दिन पागल न हो जाय ।

मनू—हूँ ऊँ (बाजीराव के एक हाथ लिपट कर) दादा, आप कहते हैं जीजाबाई ऐसी थी, ताराबाई वैसी थी और सीता बहुत बड़ी थी । तो क्या वे सब पागल थीं ?

मोरोपन्त—(कुछ हँसकर) कितना बकबक करती है यह ! एक बार इसकी जीभ खुली नहीं कि फिर रुकना तो जानती ही नहीं !!

(तात्या टोपी का प्रवेश । तात्या हृष्ट पुष्ट युवा है । फ्रांसीसी सैनिक की जैसी टोपी लगाने का उसे अभ्यास है, उसकी शेष वेश भूषा हिन्दुस्थानी है—अंगरखे के नीचे पायजामा पहिने है ।)

बाजीराव—क्या है तात्या ? नाना ठीक है न ?

तात्या—श्रीमन्त सरकार, नाना साहब बिलकुल स्वस्थ हैं । झाँसी से दीक्षित नाम के एक ज्योतिषी आये हैं । सेवा मे आना चाहते है । क्या आज्ञा है ?

मनू—झाँसी में तो अपना ही राज्य है न दादा ? कितना बड़ा नगर होगा वह ? उसमें कितनी तोपे होंगी? कितने घोड़े होगे ? कितने सिपाही ?

मोरोपन्त—उँह ! फिर वही ?

बाजीराव—उनको ठहराओ तात्या । सत्कार करो, मै मिलूंगा । किस प्रयोजन से आए है ये दीक्षित ज्योतिषी ?

तात्या—ठीक ठीक तो नहीं मालूम श्रीमन्त, परन्तु सुना है कि वे विवाह सम्बन्धों के लिए प्रायः यात्रा किया करते है ।

बाजीराव—नाना तो अभी छोटा है ।

मोरोपन्त—मुझको एक जन्मपत्री की आवश्यकता है, श्रीमन्त।

बाजीराव—हा – आँ।....

तात्या—श्रीमन्त वे झाँसी के महाराजा गङ्गाधरराव के लिये उपयुक्त वधू की खोज में हैं।

मोरोपन्त—झांसी के महाराजा ! महाराजा गङ्गाधरराव !! हूँ।

बाजीराव—उनका सत्कार करो। मै उससे मिलूंगा।

तात्या—जो आज्ञा। (तात्या जाता है)

मनू—ये झांसी के राजा भी अंग्रेज़ों के नीचे होंगे ?

बाजीराव—हां है। परन्तु राज्य उनका बड़ा है और स्वभाव तीखा।

मनू—फिर वे अंग्रेजो से लड़ क्यों नहीं जाते ?

मोरोपन्त—लड़ क्यों नही जाते ! यह लड़ाई की ही उपासी बनी रहती है !! पढ़ना न लिखना, सिवाय झगड़े टंटे के इसके माथे के भीतर और कुछ है ही नही।

मनू—हूँ क्यों नहीं है। मराठी मैने पढ़ी है, हिन्दी मै जानती हूँ। युद्धते, युद्धेते, युद्धयन्ते संस्कृत का भी। (हँसती है और वे दोनों हँस पड़ते हैं) रामायण पढ़ लेती हूँ। गीता भी—

'संभवानि युगे युगे'—ह ! ह !! ह !!! ह !!!! धर्म संस्थापन कार्यार्थी—अरे आगे भूल गई ! फिर पढूंगी। रटूंगी, घोंटूंगी।—

मोरोपन्त—बके जा ! बके जा !! भगवन् इसको नमालूम किस घड़ी में सँवार कर तुमने रचा था !!! (मुस्कराता है)

मनू—तो बतलाइये ये झांसी के राजा कैसे है ? उनमें स्वराज्य की कोई भावना है या नहीं ? वे समर्थ रामदास स्वामी के मानने वाले है या नही ?

मोरोपन्त—(हँसते हुये) ओफ़ ! श्रीमन्त मैं तो थक गया !! ये सिर खा गई !!!

बाजीराव—(मुस्कराकर) अरी काली, यह तो बतला तू यहां आई काहे के लिये है ?

मनू—हूँ....ऊँ। मैं जानती हूँ ? देखिए मैं कहती हूँ ?

बाजीराव—सही नहीं है, नहीं है। सब तो बतला तू आई किस प्रयोजन से यहां ?

मनू—आपने पूछा था, नाना साहब को कैसे उठा लाई थी ? मैं कहती हूँ कैसे भी नहीं। वे घोड़े पर बैठ गये। मैं पीछे से सवार होगई। एक हाथ से लगाम पकड़ ली, दूसरे से नाना को थाम लिया। बस।

बाजीराव—सुन लिया था। फिर से सुन लिया। नहीं भूलूंगा। अब जा नाना के पास। वहीं बैठ।

मनू—जाती हूं। पर दादा मुझको आगे काली मत कहना। ऐं....

(जाती है)

मोरोपन्त—श्रीमन्त, इसकी समझदारी इसकी आयु के आगे निकल गई है। वर की खोज के लिये मैं बहुत चिन्तित हूं।

बाजीराव—अभी तो अल्हड़ है, परन्तु मैं भी चाहता हूं कि इसका विवाह सम्बन्ध हो जाना चाहिये। गङ्गाधरराव विधुर है; उनकी पहली पत्नी को मरे बहुत दिन हो गये, यदि जन्मपत्री मिल जाय तो कैसा ?

मोरोपन्त—सरकार, मैं राजा की बराबरी कैसे कर सकता हूं ? फिर उनका स्वभाव बडा टेढा सुना गया है।

बाजीराव—हुं। जाति में कोई बडा छोटा नही होता। गङ्गाधरराव नेवालकर है और तुम ताम्बे। कोई किसी से कम नही। रह गई टेढे स्वभाव की बात सो बावले हाथी तक एक छोटे से अंकुश के वश मे कर लिये जाते है। फिर हमारी मनू तो अकुश से कही बढकर है—तेज मे परशुराम का अवतार। पढी लिखी। मराठी, हिन्दी, सस्कृत तक जानने वाली। बड़ी होने पर वह घर-गृहस्थी तो क्या बडे राज्य तक को सभालने की योग्यता रखती है। और, फिर वयस्क होने पर ऐसी ही अल्हड़ थोड़ी ही बनी रहेगी। झासी के इस सम्बन्ध से अपने सम्पर्क का भी विस्तार बढ़ जायगा।

मोरोपन्त—महाराज, मै—

बाजीराव—तुम झाँसी में सरदार पद पर रहोगे, फिर भी पेशवा के ही कहलाओगे। (सोचकर) पर अभी यह तर्क-वितर्क असमय है। सब कुछ जन्म-पत्री के मिलने पर निर्भर है।

मोरोपन्त—जैसा कुछ मनू का भाग्य हो श्रीमन्त।

बाजीराव—हा—उसका भाग्य। अवश्य ही है भाग्य की बात। मुझको तो उसका भाग्य बहुत बड़ा दिखता है।

मोरोपन्त—श्रीमान की कृपा पर सब कुछ आश्रित है। मेरी गांठ में तो कुछ है नही, चाहे सम्बन्ध यहाँ हो चाहे कही दूसरी ठौर।

बाजीराव—चिन्ता न करो, मोरोपन्त। सब ठीक हो जायगा। अब चलो। मैं नाना को देखकर दीक्षित से जल्दी मिलना चाहता हू।

मोरोपन्त—जो आज्ञा। (दोनों जाते हैं)

तीसरा दृश्य

[स्थान—झांसी। क़िले के भीतर वाले महल का दीवान आम। राजा गद्दी पर है। चवर ढुलाने वाला चंवर ढुला रहा है। इत्रदान, पानदान, हुक्का इधर उधर। राजा गङ्गाधरराव अधेड़ अवस्था के हैं। चेहरा गोल, फूला हुआ सा, आंखें बड़ी और लाल मूंछें ऊठी और चढ़ी हुई। गले में मोतियों के कण्ठे, हाथ में सोने के रत्न जटित चूड़े, कानों में मोती जड़े हुये वाले। दाहिनी भुजा पर जड़ाऊ भुजबन्द। उंगलियों मे अंगूठियां। तनीदार अंगरखी और पैजामा पहिने हैं। कमर में फेंटा, जिसके बांधने से तोंद कुछ और भी बड़ी दिखलाई पड़ती है। नीचे मन्त्री बैठा है। समय दिन।]

मन्त्री—श्रीमन्त सरकार, जन्मपत्री तो मिल ही गई है। आज्ञा हो जाय। बिठूर से पन्त प्रधान का भेजा हुआ तात्या उत्तर के लिये ठहरा हुआ है।

राजा—वह जो टोपी या टोपे कहलाता है? उसने अपनी क्या वेश-भूषा बना रक्खी है! परन्तु देह उसकी पुष्ट है।

मन्त्री—महाराज ।

राजा—[illegible] ?

मन्त्री—[illegible] ।

राजा—(गम्भीर और क्रुद्ध होकर) जिन लोगों [illegible] [illegible] कर दिया ? मैं कठोर दण्ड दूंगा ।

मन्त्री—महाराज के सुनने के लिये झांसी के बहुत सज्जन पंडित और सेठ आ रहे हैं ।

राजा—आना ही चाहिये । धर्म की रक्षा में सभी की रुचि होनी चाहिये ।

मन्त्री—महाराज, विठूर का नाता टोपी भी आवेगा । उसको श्रीमन्त सरकार की आज्ञा आज ही मिल जायगी न ?

राजा—तुम लोगों का और झासी की जनता का हठ है कि मैं विवाह कर लूं । स्वीकृति दे दूंगा—देता हूँ । तुम उसको सूचना दे देना वैसे मेरी कोई विशेष इच्छा विवाह करने की न थी ।

मन्त्री—महाराज, झांसी को अपने लिये युवराज चाहिये ।

राजा—यह सब भगवान के हाथ में है (उमङ्ग के साथ) मैंने स्वीकृति दे दी है । मोतीबाई के गायन के बाद कचहरी करूँगा ।

मन्त्री—(नीचा सिर करके)जैसी महाराज की आज्ञा हो ।

राजा—(कुछ सोचकर) कुछ समय से नाटक–शाला का काम बन्द है । कभी कोई पात्र बीमार, कभी मैं अस्वस्थ, कभी कुछ, कभी कुछ । आज मोतीबाई का नृत्य गान नही होगा । अच्छा, कचहरी के उपरान्त । उसके पास खबर भेज दो ।

मन्त्री—(ऊँचा सिर करके) जो आज्ञा ।

राजा—और, देखो, वह परदे मे आयगी, परदे का अच्छा प्रबन्ध कर देना । जूही को भी बुलवा लेना । वह भी परदे मे आयगी ।

मन्त्री—जो आज्ञा श्रीमन्त सरकार ।

राजा—मुकद्दमे वाले आ गये हों तो उनको बुलवा लो।

(मन्त्री जाता है और लौट आता है)

मन्त्री—सरकार, बिठूर वाले टोपी सरदार भी आये हैं। मुकद्दमें की सुनवाई के समय उनको यहाँ बैठने दिया जाय ?

राजा—हां, हां, बिठलाओ उनको। विवाह सम्बन्ध के लिये जो मैंने स्वीकृति दे दी है वह भी उनको सुना देना। वे तात्या टोपे कहलाते हैं। फिरंगी टोप लगाये रहते हैं न, इसलिये।

मन्त्री—(प्रसन्न होकर) जो आज्ञा। हमारी झांसी आनन्द के मारे छलक उठेगी।

(मन्त्री जाता है और लौट आता है। जब वह बैठ जाता है तब सिपाहियों से घिरा हुआ एक वन्दी आता है। कुछ नगरनिवासियों के बीच में तात्या टोपी भी। तात्याटोपी को राजा के निकट एक अच्छा स्थान बैठने को दिया जाता है। नगर निवासी भी यथास्थान बिठला दिये जाते हैं।)

राजा—(वन्दी से) क्यों जी, तुम्हारी जाति में जनेऊ पहिननें की रीति तो है नही फिर तुमने क्यों पहिना ? और, क्यों दूसरों को पहिनने के लिये बहकाया ?

बन्दी—(नीचा सिर किये हुये) सरकार, अपना आचरण सुधारने के लिये यदि कोई कुछ अनोय करे तो शास्त्रों में उनकी मनाई तो है नही।

राजा—अच्छा ! तुम लोग अब शास्त्र भी पढ़ने लगे हो !! सुनता हूँ तुम लोग क्षत्रिय बनने जा रहे हो !!!

बन्दी—(जरा सिर ऊँचा करके) क्षत्रिय तो हम लोग हैं ही। हथियार चलाना छोड़कर यदि हम लोग हथियार बनाने का काम करने लगे है तो, सरकार, हमारे क्षत्रिय मे कमी नही आ सकती।

राजा—तो अब तुम लोगों के सिवाय असली क्षत्रिय और कोई है ही नहीं। राम और कृष्ण के वंश के तुम्ही लोग हो न !!!

वन्दी—श्रीमन्त सरकार, मै क्षमा किया जाऊँ, यदि राम और कृष्ण के वंश के क्षत्रिय हमारे देश मे होते तो यहां परदेशियों का पैर कभी न रुप पाता।

राजा—(क्षुब्ध स्वर में) गुस्ताखी करता है ! उतार जनेऊ !! तोड़ँ उसको !!!

बन्दी—(सिर ऊँचा करके) मेरे जीते जी तो, सरकार, जनेऊ मेरे अंग से अलग हो नही सकता।

राजा—(अधिक क्षुब्ध स्वर में) लोहे का तार गरम करके लाओ रे कोई, लाल करके और जनेऊ बनाकर पहिनाओ इसको। तुरन्त लाओ ! तुरन्त पहिनाओ !!!

(कुछ पहेरेदार दौड़कर जाते है। राजा क्रोध के मारे कांपने लगते है। वन्दी निश्चल खड़ा है। तात्या अपनी चौकी पर थोड़ा सा हिलता है, मानो कुछ कहना चाहता हो। राजा देखते है। वे निश्चय नही कर पाते कि उससे क्या कहे। दरबार मे सन्नाटा छा जाता है। एक सिपाही लाल गरम लोहे के तार को, जिसका आकार जनेऊ का है, चिमटे से पकड़ हुये लाता है और वन्दी के पास खड़ा हो जाता है। वन्दी उसको देखकर, ऊपर की ओर आंखें उठाता है और तन जाता है। राजा तात्या की ओर फिर देखते है। वह कुछ कहने के लिये उतावला जान पड़ता है।)

राजा—सरदार तात्या टोपी, ऐसी अवस्था मे पन्त-प्रधान श्रीमन्त क्या यही न्याय न करते जो मै कर रहा हूँ।

तात्या—(खडे होकर) नही सरकार, वे ऐसा न करते। छत्रपति शिवाजी के प्रसिद्ध अमात्य बालाजी आवजी के उदाहरण को ही श्रीमन्त पेशवा मानते। बालाजी आवजी के पक्ष मे महापण्डित विश्वेश्वर भट्ट की दी हुई व्यवस्था देश भर मे मान्य है। उसका उपयोग इस वन्दी के भी मामले में होना चाहिये। पन्त-प्रधान भी ऐसा ही करते।

राजा—(शिथिल होकर) अच्छा।.......मै भी वही करूँगा। वन्दी! जाओ, तुमको छोड़ दिया। मौज के साथ जनेऊ पहिनो। परन्तु हेकड़ी मत करना।

वन्दी—(प्रणाम करके) जय हो। (जाता है)

(राजा तात्या की ओर देखता है। वह खड़ा हो जाता है)

राजा—झांसी में पड़े-पडे उकता तो नही उठे हो, सरदार साहब?

तात्या—श्रीमन्त की कृपा प्राप्त है फिर उकताहट तो कभी किसी को हो ही नही सकती। हम सब बहुत कृतज्ञ है।

राजा—व्याह यही होकर होगा, सरदार साहब। मोरोपन्त ताम्बे झांसी के जागीरदार बनाये जायेंगे।

तात्या—बहुत, बहुत धन्यवाद श्रीमन्त।

राजा—(मन्त्री से) मुहूर्त शोधकर इनको बतलादो और इनकी बिदाई कर दो।

(मन्त्री तात्या का पान और इत्र से सत्कार करता है। उसको लेकर जाता है। अन्य लोग भी जाते हैं। केवल चंवर वाला रह जाता है। मोतीबाई और जूही आती हैं। दोनों बहुत सुन्दर हैं और पूरी सजधज में हैं। मोतीबाई की आयु लगभग २२, २३ वर्ष की और जूही की १४, १५ की। दोनों कुमारी हैं और राजा गङ्गाधरराव की नाटकशाला में अभिनय किया करती हैं। वे प्रणाम करके चुप खड़ी रह जाती हैं।)

राजा—तुम लोगों को स्वस्थ देखकर मुझको बड़ी प्रसन्नता होती है। नाटकशाला का काम आजकल बन्द सा ही है। सोचा यहीं बुलाकर कुछ आनन्द मनाऊँ।

मोतीबाई—सेवा में हाजिरी बजाने के लिये सदा तैयार है सरकार।'

जूही—आज्ञा पालन के लिये...........

राजा—अब तो मंच पर जूही भी अच्छा काम करने लगी है। यह बिलकुल नही हिचकती।

(दोनों मुस्कराती हैं)

राजा—आरम्भ करो।

दोनों—जो आज्ञा।

(वे दोनों गाती हैं और नाचती हैं)

गीत

मलय समीर मस्त परिमल जब मधुबन-मधुबन बिखराती है,
कोयल कू कू कू कू कर के स्वर में ताल मिलाती है;
कू कू कू ऊ कू कू कू ऊ, कू कू कू ऊ, कू कू कू ऊ—
स्वर में ताल मिलाती है।
पश्चिम की लाली के पहले श्यामा चहक लगाती है,
नई नवेली तानें ले ले अपने निकट बुलाती है;
कू कू कू ऊ, कू कू कू ऊ, कू कू कू ऊ, कू कू कू ऊ—
स्वर में ताल मिलाती है।

राजा—तुम्हारा काम मुझको बहुत रुचा। मोतीबाई, तुम्हारी झांसी को रानी मिलने वाली है।

दोनों—हम लोगों का सौभाग्य सरकार। सुना है।

मोतीबाई—झांसी फूली न समायेगी।

जूही—हम लोगों की नाटकशाला—

राजा—(हँसकर) वह और अधिक रंगीन हो जायगी। और तुम लोगो को और भी अधिक पुरस्कार मिलेंगे।

जूही—मैं यही निवेदन करना चाहती थी, सरकार।

मोतीबाई—हम लोगो के लिये और क्या आज्ञा है, श्रीमन्त?

राजा—तुम लोग जाओ। दरबार का कुछ काम करने को और रह गया है।

(वे दोनों प्रणाम करके जाती हैं। मंत्री आता है।)

मन्त्री—महल के उस टहलुये का मामला और रह गया है। वैसे कोई बड़ा अपराध तो नही है। पहरे पर असावधान भर हो गया था, सरकार वह।

राजा—(उत्तेजित होकर) इसको छोटा अपराध समझते हो ! यदि उसकी असावधानी के कारण किसी ने मेरे भोजन में विष मिला दिया होता तो ? कोई चोर घुस आता ? कुछ और हो जाता ? तो क्या होता ? टहलुये को बिच्छुओं से कटवाओ । (क्रुद्ध स्वर में) अभी इसी समय बिच्छुओं से कटवाओ ।

मन्त्री—जो आज्ञा ।

(जाता है)

चौथा दृश्य

[स्थान—झांसी की एक चौड़ी सड़क । दक्षिण में ऊंचाई पर क़िला है और बाक़ी दिशाओं में झांसी का शहर । नेपथ्य में शहनाई बज रही है और चहल पहल हो रही है । कुछ नगर निवासियों का प्रवेश । सड़क किनारे एक बड़ा मकान है । उसमें खिडकियां और गोख हैं । खड़कियां बंद हैं । समय प्रातःकाल के उपरांत ।)

एक नगर निवासी—(नेपथ्य की चहल-पहल और शहनाई पर कान देकर) वह देखो महाराज की सवारी आ रही है ।

दूसरा—घोड़े पर बैठकर आ रहे है ।

तीसरा—गणेश मन्दिर के पास ताम-झाम में बैठकर जायेंगे ।

पहला—चलो वहां जहां वे घोड़े पर बैठे दिखलाई पड़ेंगे ।

(वे तीनों और कुछ नगर निवासी दौडते हुये चले जाते हैं । स्त्री पुरुषों का एक दूसरा समूह आता है ।)

एक—वह देखो, महाराज तामझाम में आ रहे हैं ।

(आगे आगे बजते हुये बाजे, पीछे पीछे तामझाम में बैठे हुये राजा गङ्गाधरराव का दूल्हा वेश में प्रवेश । नगर निवासी हुल्लड़ सा मचाते हुये भीड़ करते हैं । सिपाही उनको, मार्ग के लिये, इधर-उधर हटाते हैं । मकान के ऊपर की खिड़कियां खुलती हैं । एक खिड़की पर दुलहिन वेश में मनू ज़रा पीछे हट कर खड़ी है । अन्य खिड़कियों पर कुछ स्त्रियां अधिक पीछे हटी हुई खड़ी हैं जो अस्पष्ट दिखलाई पड़ती

मनू—तुम कौन हो ? [illegible] कोई कुछ कहे, फिर भी [illegible] सुन्दर !

राधारानी—([illegible]) सरकार मैं [illegible] हूँ । सरकार की सेना में [illegible] किया हुआ है ।

मनू—सब पुरुषों को [illegible] बन्दूक चलाना, घोड़े पर चढ़ना [illegible] आना चाहिये । ([illegible])

राधारानी—सरकार, पुरुषों का काम स्त्रियां करें ।

मनू—तुम अपने केशों के फूल और अधिक मत नोचो ।

(राधारानी फूलों का हटाना बन्द कर देती है)

मनू—मुझको तुम्हारे फूल अच्छे लगते हैं । परन्तु वे हरी-भरी देह पर ही सजते है । स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा एक बात में बढ़ी है। वे फूलों से अधिक कोमल और वज्र से अधिक कठोर है । हर एक स्त्री में ये दोनों गुण होने चाहिये । पुरुष में नहीं हो सकते । स्त्रियां पुरुषों का सब काम कर सकती हैं और कुछ उनसे बढ़कर भी ।

राधारानी—सरकार तो ऐसी बातें करती हैं जैसी हमारी बड़ी भी नही कर सकती ।

मनू—(जरा सा सहमकर) अभी तो पुस्तकों में पढ़ा ही है । (मुस्कराती है फिर तुरन्त गम्भीर होकर) परन्तु इसको करके भी दिखलाऊँगी । और, तुम सब भी कर सकोगी ।

सुन्दर—सरकार की बात मैं अब समझी ।

सुन्दर—अवश्य हो सकेगा ।
काशीबाई—सरकार की कृपा से.......
राधारानी—हो जायगा ।
} तीनों एक साथ

(नेपथ्य में सीमन्ती के लिये महाराज की सवारी गणेश-मन्दिर में पहुँच गई है ।)

(वे सब जाती है खिडकियां बन्द हो जाती हैं)

पाचवाँ दृश्य

[स्थान—झांसी के एक बड़े भवन का खुला हुआ स्थान। वितानों और वन्दनवारों की सजावट है। मनू और गङ्गाधरराव का विवाह हो रहा है। पुरोहित इत्यादि अपना अपना काम कर रहे हैं। एक ओर तात्या टोपे और नाना हैं। दूसरी ओर तार-वाद्य बज रहे हैं और बीच बीच में मीठे धीरे स्वरों में शहनाई बज रही है। पुरोहित बहुत बूढ़ा है। लक्ष्मीबाई की साडी से गङ्गाधरराव की चादर की गांठ बांधने के समय उसका हाथ कांपता है। वह गांठ बांधने का प्रयत्न करता है परन्तु सफल नहीं होता। समय—दिन]

मनू—(पुरोहित के विफल प्रयत्न के कारण अकुलाकर) उंह—ऐसी बांधिये कि कभी छूटे नहीं।

(पुरोहित हँस पड़ता है। अन्य लोग भी। मनू नीचा सिर करके मुस्कराने लगती है। गङ्गाधरराव संकोच के मारे सिकुड़ से जाते हैं।)

नाना—(तात्या से) अब मिली इस उद्दण्ड राजा को प्रचंड रानी।

तात्या—शायद झांसी को असली राजा तो अब मिला, नानासाहब।

नाना—एक ही बात है। जी चाहता है मनू से कह दूं कि यह ससुराल है, नव कर चलना।

तात्या—अधिक उचित तो यह होगा, नाना साहब, कि राजा को संभल कर चलने के लिये कहा जाय। परन्तु क्या ऐसी बात कोई किसी की मानने के लिये तैयार होगा ?

नाना—झासी हमारा अधिकृत राज्य था।

तात्या—अब तो, नाना साहब, वह अंग्रेजों के नीचे है।

नाना—(भौंह तानकर और दांत पीसकर) हां.......जाने दो। नहीं कहूंगा। दो एक दिन में बिठूर पहुंचने पर काका से कहूंगा। वे चिट्ठी में आग्रह के साथ लिख भेजेंगे।

तात्या—ऐसी बात, शायद, कोई किसी को लिख भी नहीं सकता।

लक्ष्मीबाई—बतलाओ मेरे ससुर का नाम !

राधारानी—राजा शिवराव भाऊ। भाऊ साहब—अरे:—

लक्ष्मीबाई—यहां सब स्त्रियो मे सबसे अधिक नटखट तुम हो ! पहले ही अरसट्टे मे फिसल गईं !! लाला भाऊ !!! नाना भाऊ !!!!

(लक्ष्मीबाई उसका हाथ छोड़ देती है)

मुन्दर—यही तो इनके पति का नाम है। कैसे जल्दी निकल गया मुंह से।

(राधारानी को रानी माला पहिनाती हैं)

राधारानी—(लक्ष्मीबाई के कान में) झलकारी कोरिन के पति का नाम पूरन है, सरकार।

लक्ष्मीबाई—झलकारी, चन्दा किस दिन पूरा दिखलाई पडता है।

झलकारी—पूरनमासी के दिना, सरकार। ए य !

लक्ष्मीबाई—(हँसकर) हां, हां पूरन है नाम तुम्हारे पति का। ठीक तो है। (लक्ष्मीबाई उसको माला पहिनाती हैं)

राधारानी—अब सरकार, हम लोग अपने नाच गान से गौर-माता को रिझायें ? जैसी आज्ञा हो ?

लक्ष्मीबाई—अवश्य।

(सब स्त्रियां नृत्य-गान करती हैं। झलकारी का बुन्देलखंडी नृत्य होता है)

गान

पंछी बोल गया रे, पछी बोल गया।

झिलमिल झिलमिल किरनें फूटीं,

अन्धकार की कसने टूटीं,

गङ्गाधर की अलकें छूटीं,

धारें पुलकित हुई अनूठी,

गजरा डोल गया रे,

सौरभ घोल गया रे.

पंछी बोल गया रे; गाकर बोल नया,

पंछी बोल गया।

लक्ष्मीबाई—तुम लोगों को हर्ष-मग्न देखकर मुझको भी बहुत हर्ष है। आज तुमसे मैं एक भीख मांगती हूँ। दोगी।

(सब स्त्रियां स्थिर हो जाती हैं और आश्चर्य में पड़ जाती हैं)

लक्ष्मीबाई—फूल जब खिलते हैं तब उनमें महक होती है; वे अच्छे लगते हैं। उनका आधार क्या है? वे कहां शोभा पाते हैं?

राधारानी—(आगे आकर) सरकार ही बतलावें।

लक्ष्मीबाई—देह। पुष्ट, बलिष्ठ देह पर ही वे शोभा देते हैं। वहीं उनकी महक अच्छी लगती है। उनकी स्मृति वहीं से बल पाती है। मुझको वचन दो कि देह को पुष्ट बनाओगी, व्यायाम करोगी, हथियार चलाना सीखोगी। दोगी मुझको यह भीख?

स्त्रियां—हम लोग अपनी देह को सबल बनावेंगी।

लक्ष्मीबाई—और मन को निडर। मन को भगवान का भक्त बनाने से वह निडर हो जाता है।

स्त्रियां—मनको निडर बनावेंगी।

लक्ष्मीबाई—तब—तभी—तुम देवी कहलाने योग्य बनोगी। देवी फूल मालायें पहिनती हैं और अपने प्रबल हाथ में तलवार भी लिये रहती हैं। समझ गईं?

स्त्रियां—समझ गईं।

लक्ष्मीबाई—हरदी कूं कूं का आशीर्वाद तभी सफल समझना जब शरीर और मन को एक पात में बिठला सको।

स्त्रियां—ऐसा ही होगा।

लक्ष्मीबाई—मैं स्त्रियों की एक सेना बनाऊँगी।

स्त्रियां—हम लोग उसमें काम करेंगी।

लक्ष्मीबाई—कुछ दिनों यहीं, महल के भीतर, काम सीखना।

स्त्रियां—अवश्य।

(एक पहरे वाली आती है)

लक्ष्मीबाई—महाराज, स्वराज्य के लिये कोई विशेष गुण नियत नहीं है। छत्रपति शिवाजी ने यदि ऐसा सोचा होता तो हम और आप आज कहां होते ?

गङ्गाधरराव—आप बातों में बहुत बढ़ जाती हैं।

लक्ष्मीबाई—मर्दों को चूड़ियां पहिना दीजिये और हम स्त्रियों के हाथ में दीजिये तलवार, फिर देखिये हम स्त्रियां अंग्रेजी सेना को झांसी में कितने दिन टिकने देती हैं।

(क्षोभ के मारे गङ्गाधरराव का गला रुद्ध हो जाता है। वे टहलने लगते हैं फिर वे अपना घोर संयम करते हैं)

गङ्गाधरराव—मैं आपके प्रमोद में सहयोग देने आया था परन्तु क्या बतलाऊँ—न जाने आपको कभी कभी क्या हो जाता है! आप मौज में स्त्रियों की पल्टन बनाइये, उन्हें मोटा तगड़ा कीजिये। मेरा क्या जाता है ?

लक्ष्मीबाई—अभी कुछ नहीं कह सकती हूँ (आत्म-नियन्त्रण करके थोड़ी देर पीछे) आप गौर का पूजन देखने के लिये आये थे ? कदाचित् गौर को नमस्कार करने के लिये भी ?

गङ्गाधरराव—(ठण्डे पड़कर) हां—अवश्य।

लक्ष्मीबाई—तो नमस्कार कर लीजिये।

(गङ्गाधरराव आंख मूंदकर करबद्ध खड़े हो जाते हैं। लक्ष्मीबाई भी हाथ जोड़ लेती हैं, परन्तु उनकी आंखें खुली हैं)

गौर नारी जाति की है और तलवार का पकड़ना और चलाना भी जानती है।

गङ्गाधरराव—(आंखे खोलकर और मुस्कराकर) हां।

आठवां दृश्य

स्थान—[झांसी में पोलिटिकल अफ़सर का बगीचा। पोलीटिकल अफ़सर टहलता हुआ आता है। उसके साथ एक अंग्रेज़ी फ़ौजी अफ़सर है। समय संध्या।]

पो० अफसर—यहीं की जनता देख लो न, जितनी बार अंग्रेजी शासन हुआ, लूटमार और अव्यवस्था बन्द हो गई।

फौजी अफसर—गङ्गाधरराव का दो महीने का बच्चा तो मर गया, वे शायद किसी को गोद लेंगे। झाँसी के अच्छे दिन दूर फिक जायंगे।

पो० अफसर—राजा का ब्याह हुये पांच साल हुये हैं। इन पांच वर्षों वे बहुत कुछ स्वस्थ रहे. परन्तु अब बहुत बीमार हैं। गोद लेने योग्य हालत में नहीं जान पड़ते। लेंगे भी तो मन्जूर नहीं होगी। अपनी सरकार की नीति स्पष्ट है। इस देश को दृढ़ शासन, टिकाऊ व्यवस्था और निष्पक्ष न्याय की सख्त जरूरत है। वह रियासतों में नहीं मिल सकता है।

फौजी अफसर—सब रियासतें खतम हो जायं तो अच्छा।

पो० अफसर—कह नहीं सकते। कम्पनी के डाइरेक्टरों का बोर्ड सारी की सारी रियासतों के खतम करने का निषेध करता है। कुछ रियासतें बनी भी रहनी चाहिये। ये हमारे राज्य की सहायक हैं और रहेंगी।

फौजी अफसर—कम्पनी का बोर्ड अपने नफे की रक़मों की ओर पहले ध्यान देता है। यहां की वास्तविक स्थिति तो गवर्नर जनरल ही जानते हैं।

पो० अफसर—फिर भी इंगलैंड के राजनीतिज्ञ काफ़ी होशियार हैं। गवर्नर जनरल को भी अपनी काउन्सिल के बहुमत को रद्द करने का पूरा अधिकार मिल गया है। हिन्दुस्थान का अभिजात वर्ग चैन पा गया है। वह यहां के हितों का भण्डारी है। जनता को भी शांति मिल गई है। वह अभिजातों के प्रभाव में है और ये सब अपने आतंक में।

फौजी अफसर—इसी आतंक को गहरा और मजबूत बनाने की जरूरत है।

पो० अफसर—बिलकुल ठीक कहते हो। अपने छोकरों को जो आक्सफर्ड और केम्ब्रिज से निकल कर यहां आते रहेंगे पराक्रम-विकास के लिये बहुत लम्बा चौड़ा मैदान मिलता रहेगा। हिन्दुस्थानियों की

[illegible] और [illegible] जायेंगे। [illegible], [illegible] के [illegible] को [illegible] और [illegible]। [illegible], क्योंकि हमारी सत्ता [illegible]।

फौजी अफसर—हिन्दुस्तानी किसी दिन अपने देश का शासन भी चाहेंगे। हैं—।

पो० अफसर—इसके लिये वर्षों की जरूरत पड़ेगी। परन्तु जब वह दिन आयगा हमारी सन्तान सोच-समझकर काम करेगी, लेकिन वह दिन अभी बहुत बहुत दूर है। और, तब तक हिंदुस्थान हमारा इतना अहसान-मन्द हो जायगा कि हमको छोड़ेगा तो नहीं। दृढ़ता, निर्भीकता, न्याय-निष्ठा और कानून की परम्पराओं के कायम रखने से ही तो सफलता मिलेगी।

फौजी अफसर—परन्तु हम लोगों को हिन्दुस्तानी समाज से फासले पर रहना चाहिये, क्योंकि वह गन्दा बहुत है। और, इङ्गलैंड के भावी फ़ायदे को भी ध्यान में रखते रहना है। उन छोकरों के लाभ को भी।

(एक हिन्दुस्थानी फ़ौजी का प्रवेश)

हिन्दुस्थानी फौजी—हुजूर, महल से खबर आई है कि महाराज बहुत बीमार हैं। बुलावा आया है।

पो० अफसर—अच्छा, जवाब दो—हम अभी आते हैं।

(हिन्दुस्थानी फ़ौजी जाता है।)

फौजी अफसर—मालूम होता है कि राजा मर जायगा; उसको विलायती दवाखाने के लिये कहा गया तो वह राजी ही नहीं हुआ।

पो० अफसर—परमात्मा उसकी आत्मा को शान्ति दे।

फौजी अफसर—(हँसकर) परन्तु वह अभी मरा नहीं है।

पो० अफसर—(हँसकर) लक्षणों से जान पड़ता है कि वह बचेगा नहीं। झांसी अंग्रेजी इलाके में मिलाई जायगी।

फौजी अफ़सर— शायद कोई विप्लव हो उठे, क्योंकि राजा के अत्याचारी होते हुये भी जनता रानी को प्यार करती है और उसका राज्य चाहेगी; सेना को सावधान रहना चाहिये।

पो० अफ़सर—रानी योग्य है केवल इतना ही यहां की परिस्थिति के अनुकूल है बाक़ी सब प्रतिकूल है। मैं राजा के पास जाता हूँ। तुम अपनी छावनी को देखो।

(दोनों भिन्न भिन्न दिशाओं में जाते हैं)

नवाँ दृश्य

[स्थान—गङ्गाधरराव का महल। गङ्गाधरराव मरणासन्न है, शय्या पर पड़े हैं। आस-पास मोरोपन्त उनके दीवान और वैद्य हैं। एक पर्दे के पीछे लक्ष्मीबाई हैं। समय—दिन।]

गङ्गाधरराव—(शिथिल स्वर में) मुझको अभी जीने की आशा है। परन्तु मैं प्रबन्ध कर रहा हूँ। कहीं कुछ हो गया तो झांसी अनाथ नहीं रहेगी।

वैद्य—महाराज चिन्ता न करें। चंगे हो जायेंगे!

गङ्गाधरराव—हाँ तुम्हारे रस से मुझको कुछ चैन तो मिला है—साहब को बुलाया था आये नहीं?

(पहरेदार आता है)

पहरेदार—श्रीमन्त सरकार, साहब आ गये हैं। ड्योढ़ी पर हाज़िर है।

मोरोपन्त—उनको भेज दो।

(पहरेदार जाता है और पोलिटिकल अफ़सर आता है। अभिवादन के बाद उसको कुर्सी दी जाती है।)

गङ्गाधरराव—मैं अच्छा हो रहा हूँ। जीने की आशा है। परन्तु यदि कोई अनदेखी अनचाही हो जाय तो उसके लिये मैंने बन्दोबस्त करने का निश्चय कर लिया है। मेरे कुटुम्ब का एक लड़का आनन्दराव है। मैं उसको गोद ले रहा हूँ। मोरोपन्त जी, आनन्दराव को ले आइये।

(मोरोपन्त जाता है और आनन्दराव को ले आता है। आनन्दराव पांच वर्ष का एक सुन्दर बालक है।)

गङ्गाधरराव— देखो मेजर साहब, यह कितना सुन्दर और होनहार है। मेरी रानी सी माता को पाकर झांसी को चमका देगा। मेरी झांसी को ये दोनों बडा भारी नाम देंगे········

(पर्दे के पीछे रानी की सिसकी सुनाई देती है।)

गङ्गाधरराव—(पर्दे की ओर मुँह फेरकर) यह क्या है ? रोती हो ? मै अच्छा हो रहा हूँ। मै आनन्दराव को गोद ले रहा हूँ। तुम्हारी अनुमति है ?

लक्ष्मीबाई—(पर्दे के भीतर से) जी हाँ।

गङ्गाधरराव— मेजर साहब, हमारी रानी स्त्री जरूर है परन्तु इसमें ऐसे गुण है कि संसार के बड़े-बड़े मर्द इसके पैरों की धूल अपने माथे पर चढावेगे।

(राजा के आंसू आ जाते है)

पो० अफ़सर—मैंने महारानी साहब की बहुत तारीफ़ सुनी है। वे बहुत योग्य है। आप चिन्ता न करें। अच्छी तरह से दवा करें। आप स्वस्थ हो जायेगे।

गङ्गाधरराव—मेरे हृदय मे पीड़ा हो रही है। मै सब काम जल्दी निबटाना चाहता हूँ। आनन्दराव का नाम दामोदरराव रक्खूगा। अच्छा नाम है न मेजर साहब ?

पो० अफ़सर—जी हा सरकार।

गङ्गाधरराव—आप गोदी को लाटसाहब से कबूल करवा दीजियेगा, मेजर साहब। इसकी नाबालगी के ज़माने तक रानी राज्य चलावेगी, उसके उपरान्त दोनो राज्य का काम करेगे।

पो० अफसर—मै कोशिश करूंगा, महाराज।

गङ्गाधरराव—हमारे घराने ने अंग्रेज सरकार की सदा सहायता की है। यहा तक कि जब बुन्देलखण्ड का कोई रजवाडा आपकी सरकार

के साथ न था, बल्कि सब के सब विरुद्ध थे, तब झांसी ने आप लोगों के साथ मित्रता का गठबन्धन किया था। सन् १८०४ की बात है न मोरोपन्त? मैं उस समय बहुत छोटा था।

मोरोपन्त—हां श्रीमन्त सरकार, और फिर १८१८ में पुनः वही सन्धि दुहराई गई थी।

पो० अफ़सर—आपको पीड़ा हो रही है महाराज, अब आप अधिक बातचीत न करें। मैं लाट साहब को लिखूंगा।

गङ्गाधरराव—तो आप मेरा हाथ पकड़कर वचन दीजिये, मेजर साहब। यह हमारे यहां का क़ायदा है।

पो० अफ़सर—(गङ्गाधरराव का हाथ पकड़कर) वर्तमान लाट साहब गोद के क़ानून को नहीं मानना चाहते, परन्तु मैं अपनी कोशिश में कोई कसर नहीं लगाऊंगा। आप जानते हैं, सरकार, कि मैं लाट साहब का मातहत हूँ।

गङ्गाधरराव—(पो० अफ़सर का हाथ छोड़कर धीमे स्वरमें) मुझको आपका भरोसा है। मैं चाहता हूँ मेरी बपौती मेरे वंश में बनी रहे—मेरे घर में मेरे पुरखों का दीपक जगमगाता रहे। आओ बेटा आनन्दराव इधर।

(आनन्दराव गङ्गाधरराव के पास जाता है)

गङ्गाधरराव—देखिये मेजर साहब, मैं आपके सामने इसको गोद लेता हूँ। इसका नाम दामोदरराव होगा। शास्त्र की रीति थोड़ी देर में बर्तली जायगी।

पो० अफ़सर—मुझको आज्ञा हो तो मैं जाऊं?

गङ्गाधरराव—हां, आप जाइये। मेरे मन में शान्ति है।...... शान्ति है। ओम शान्ति, शान्ति, शान्ति।

(पो० अफ़सर प्रणाम करके जाता है)

यवनिका

को बिना स्वीकार किये हुए पोलिटिकल असिस्टेंट खड़ा हो जाता है और जेब में से एक कागज़ निकाल कर खोलता है।)

पो० अफ़सर—मेरी ड्यूटी है—कठोर, दुखदायक कर्तव्य। महारानी साहब कहां हैं ?

पो० अफ़सर—(रानी साहब की गद्दी की ओर मुँह फेरकर नमस्कार करके, कुछ कांपते हुए स्वर के साथ) जो कुछ मेरे सामर्थ्य में था मैंने किया, परन्तु गवर्नर जनरल साहब ने गोद को नामंजूर कर दिया है। झांसी का राज्य अंग्रेजी इलाके में मिलाया जाता है। महारानी साहब को किला खाली करना होगा। उनको रहने के लिये शहर वाला महल, और गुजर के लिये पांच हजार रुपया मासिक मिलेगा। दीवान साहब, आपको खजाना और कुंजी ताले मेरे सुपुर्द करने होंगे। झांसी की फ़ौज बरखास्त की जाती है। उनको छः छः महीने का वेतन दे दिया जायगा। खजाने में जो कुछ बाकी रहेगा वह श्रीमन्त दामोदरराव को बालिग होने पर दे दिया जायगा।

(जल्दी जल्दी)

ओपटकर—हाय !

जवाहरसिंह, रघुनाथसिंह—ओफ !!

गुलामगौस, खुदाबख्श—आह !!!

मोरोपन्त—हे भगवान !!!!

मोतीबाई और जूही—अनहोनी हुई !!!!!

लक्ष्मीबाई—मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।

पो० अफ़सर—मैं समझता हूँ असन्तोष का कोई कारण नहीं है। जैतपुर, नागपुर और बिठूर—कहीं की भी गोद को तो लाट साहब ने नहीं माना।

लक्ष्मीबाई—मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।

पो० अफ़सर—आपको सरकार, निजी सम्पत्ति दे दी गई है, गुजर के लिये पांच हजार रुपया काफ़ी है। (दरबार में उपस्थित लोगों से) जो कुछ मैंने कहा है उसका शीघ्र पालन होना चाहिये। अब हम लोग जाते हैं।

झोपटकर—(क्षीण स्वर में) पान.......

पो० अफ़सर—नहीं, क्षमा कीजिये।

(वे सब लक्ष्मीबाई को फ़ौजी शिष्टाचार के लिये प्रणाम देकर शीघ्रता के साथ चले जाते हैं।)

लाला भाऊ—मुझको आज्ञा हो। अभी अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिये जायंगे।

गुलामग़ौस—केवल गोले भरने की जरूरत है तोपों में सरकार।

जवाहरसिंह और रघुनाथसिंह—सवार और पैदल सब तैयार हैं।

लक्ष्मीबाई—(पर्दे के पीछे से) नहीं। झांसी नगर और राज्य की जनता से भी पूछना है। अवसर नही है। आतुरता मत करो।

झोपटकर—बहुत बुरा हुआ परन्तु धीरज धरना पड़ेगा। क्या आज्ञा है, श्रीमन्त।

लक्ष्मीबाई—(धीमे, संयत स्वर में) अभी तो पीकर रह जाना पड़ेगा। नाना साहब और तात्या से भी पूछना पड़ेगा।

जवाहरसिंह और रघुनाथसिंह—(क्षुब्ध स्वर में) तब तक क्या किया जाय, सरकार ?

लक्ष्मीबाई—तब तक, मेरे सरदारो, धीरज के साथ अवसर की प्रतीक्षा करो। हम लोग सदा के लिये परदेसियों का शासन अङ्गीकार नही करेंगे। अभी चुपचाप जाओ। नाना भोपटकर जी, इस प्रकार बर्ताव करो कि अंग्रेजों को सन्देह न हो। मेरी ओर से राज्य वापिस पाने की लिखा-पढी करो।

झोपटकर—(हताश स्वर में) जो आज्ञा।

खुदाबख्श—सरकार हम लोगों के जी की जी में ही रह जाती है।

गुलाम ग़ौस—श्रीमन्त हम लोग परदेसियों के सामने कैसे सिर झुकावेंगे ?

झोपटकर—उतावली करने से काम नही चलेगा। बुद्धि और विवेक से काम लेना होगा। राजनीति उपायों और परिणामों की कला का नाम है।

दूसरा दृश्य

[स्थान - झाँसी की एक बड़ी सड़क। डुग्गी पीटने वाला आता है। समय—दिन]

डुग्गी पीटने वाला—खल्क भगवान का, मुल्क विलायत के बादशाह का हुकुम कम्पनी सरकार का। राज में झाँसी सर्कारी इलाके में मिला ली गई। सब लोग कर और लगान कम्पनी सरकार को दें। कानून के भीतर रहें और बाहर न हों।

(कई बार धमधाम कर चलता है। भीड़ इकट्ठी हो जाती है)

एक—हाय! हाय!! हमारी झाँसी गई!!! अब परदेसियों का राज हो जायगा!!!!

दूसरा—हमारी आजादी छिन गई!

तीसरा—साहब के बंगले पर अर्जी-पुर्जी के लिये भटकना पड़ेगा!

चौथा—और नाक रगड़ना पड़ेगी।

एक—अब कारीगरी, कलाकारी, पहलवानी सब देश से उठ जायंगी!!!

(पीरअली आता है वह अधेड़ अवस्था का मझोला इकहरा पुरुष है। काइयां और साहसी है। नवाब अलीबहादुर का नौकर है।)

पीरअली—क्यों हाय-तोबा मचा रहे हो? अंग्रेजी हुकूमत में अंधेर नही होगा। सबको रोजगार मिलेगा। मनमानी नही चलेगी। एक सा बर्ताव सब लोग पायेंगे। सब अपना-अपना धरम-करम पाल सकेंगे। भरोसा न हो तो नवाब अलीबहादुर से पूछ लो। सब बड़े आदमी यही कहेंगे।

(झलकारी आती है)

झलकारी—जो आओ बड़ो वकील अंग्रेजन को। काए खो लगाई रे जे बड़ी-बड़ी मूछें? सरम नईं आउत ऐसी ओछी बात कतन!

पीरअली—कौन है यह?

(डुग्गी वाला फिर डुग्गी पीटता है। झलकारी चली जाती है।)

एक भीड़ वाला—वह कोरिन थी। झलकारी। कड़ी बात कहने वाली औरत है वह!

पीरअली—गंवार है। बात करने की तमीज नहीं। यहां की औरतें बहुत सिर उठाने लगी हैं। पर अब अच्छा जमाना आ रहा है।

दूसरा भीड़ वाला—अच्छा जमाना! क्यों साहब?

भीड़ में से एक—जो झांसी की लटी तकै तिहि खायँ कालिका माई।

(चला जाता है)

पीरअली—यह कौन बेअदब था?

(भीड़ में गुल-गपाड़ा बढ़ता है)

भीड़ में से एक—आप कोई परदेशी हैं खां साहब?

पीरअली—जानते नही मैं नवाब अलीबहादुर का कारिन्दा हूँ? पीरअली मेरा नाम है। दुनियां जानती है!

भीड़ वाला—तभी। तभी।

(भीड़ शोर करती है) सत्यानाश जाय देश-द्रोहियों का!!!!

(डुग्गी पीटने वाला फिर डुग्गी पीटता है। पीरअली आंखें दिखलाता हुआ चला जाता है।)

एक भीड़वाला—इसके मनमें अपनी भूमि के लिये कोई पीर नहीं।

दूसरा—स्वार्थी और नीच है। परदेसियों का तरफदार।

तीसरा—नवाब साहब को लगा देंगे अंग्रेज जागीर!

एक—उसी के लोभ में और मोह में तो ये देश-द्रोही फसे हुये हैं।

दूसरा—(डुग्गी पीटने वाले से) जा रे टुकड़खोर, किसी दूसरे मुहल्ले में डुग्गी पीट। यहां हमारे कान मत फोड़।

(डुग्गी पीटनेवाला सहमता हुआ जाता है।)

तीसरा दृश्य

[स्थान—झांसी की सड़क पर जूही का घर। एक ओर से तात्या आता है। जूही किवाड़ खोलती है। तात्या को अभिवादन करके उसको भीतर लिवा जाती है। जूही केशजूट में फूल लगाए है समय—रात्रि।]

तात्या—मैं यहां की सिपाहियों का हाल देखकर समझ गया हूं । कुछ बातें बाकी बाहर से मालूम हुईं । कुछ आंखों आई से समझाईं । कुछ तुमसे पूछने आया हूं । छावनी में तुम क्या कर रही हो, जूही ?

जूही—छावनी जाती हूं और सिपाहियों को समझाती रहती हूं कि देश के लिये अपनी जान तक दे देना सिपाही का पहला और अन्तिम कर्तव्य है । छावनी में क्या हो रहा है इस बात को भी जानने की कोशिश करती हूं ।

तात्या—ऐसा मन लगता मुझको यदि ऐसे अवसरों पर मैं भी छावनी में छिपकर तुम्हारा काम देखता ।

जूही—(सिर हिलाकर) तब तो अभिनय पर से मेरा ध्यान बार २ उचट जाता और शायद मैं पकड़ी जाती और आप भी ।

तात्या—(हँसकर) मेरा पकड़ा जाना इतना सहज नहीं है । (गम्भीर होकर) परन्तु जूही, मैं सचमुच मैसूर की यात्रा में एक जगह जरा सी असावधानी के कारण पकड़ लिया गया होता । बाल बाल बचा । और, दिल्ली में तो अंग्रेजों के एक खानबहादुर नौकर ने पकड़वा ही दिया था, परन्तु राम सीधे थे, इसलिये पहरे वाले एक जाट सिपाही ने अपनी जानपर खेलकर मुझको निकल भागने दिया ।

जूही—(घबराहट में सिर हिलाकर) ओह ! सरदार साहब, कितना बुरा होता !! हम लोगों का काम चौपट हो जाता !!!

तात्या—मनुष्य के समाप्त हो जाने से काम करने वालों का तांता नहीं टूटता ।

जूही—आप तो सारे देश को जगाते फिर रहे हैं ।

तात्या—बहुत फिरता रहा हूं । और लोग भी घूमे हैं जैसे नाना-साहब, अजीमुल्ला और अन्य लोग । जनता सामंतों और सरदारों से पीड़ित होने के कारण दुखी है और सामंत सरदार अपनी आपापन्थी के कारण परस्पर मेल-जोल नहीं कर सकते । फिर भी हम लोग अपने काम में जुटे हुये हैं । सेना का भरोसा है । जिस भूमि की जनता है उसी के फूल सिपाही हैं । यहां की छावनी में क्या हो रहा है ?

जूही—(उसी प्रकार सिर हिलाते हुये) अंग्रेज़ तरह तरह के लोभ देकर सिपाहियों को बेधरम करना चाहते हैं। सिपाही अपना धरम नहीं छोड़ेंगे। उनमें बहुत गुस्सा छाया हुआ है।

तात्या—यही हाल उत्तर की ओर पूर्व की छावनियों का भी है।

जूही—सिपाहियों को अंग्रेज़ सीख देते है कि नमक को भँजाते रहना।

तात्या—सिपाही जिस भूमि के है नमक तो उसी भूमि का है। और, उसी भूमि को भँजायेंगे।

जूही—मैंने सिपाहियों से यही कहा है।

तात्या—तुम्हारी बुद्धि पर मुझको आश्चर्य है।

जूही—आश्चर्य करिये महारानी साहब की बुद्धि पर जिन्होंने हम स्त्रियों को यह सब समझाया है और जिन्होंने कवायद परेड कराके स्त्रियों की ऐसी पल्टन बनाई है (सिर को अधिक हिलाकर) ऐसी पल्टन तैयार कर रही है जो कि अंग्रेजों के छक्के छुटा देगी। (सिर हिलाने के कारण जूही के केश जूट से कुछ फूल खिसक कर गिर पड़ते हैं। तात्या फूलों को उठाकर उसके केशों में खोंसता है।)

तात्या—तुम सब स्त्रियां स्वतन्त्रता, स्वराज्य और समाज की देवियाँ हो। ईश्वर से मनाता हूँ कि एक दिन आये, जब इस देश की मुक्ति और तुम्हारे फूलो की महक का सम्मेलन हो।

जूही—(जरा दूर हटकर) यदि इस काम के करने में मैं या मेरी तरह और स्त्रियां मर जायें तो टूटे हुये फूलों की महक और देश की मुक्ति के मेल को न भूलियेगा आप लोग।

तात्या—(नमस्कार करके) पुरुष यदि पुरुष है, मनुष्य है, तो कभी नही भूलेगा, जूही।

जूही—धन्यवाद!

तात्या—मैं अब जा रहा हूँ जूही।

जूही—वह दिन कब आवेगा, सरदार साहब? वह दिन जब हम सब स्वतन्त्र होंगे?

मान्या— [illegible] । अच्छा, मैं [illegible] ।

जूही— [illegible] परमात्मा [illegible] ।

मान्या— [illegible] ।

([illegible] जाता है)

चौथा दृश्य

(स्थान—झाँसी के पास छावनी । कुछ सिपाही आते हैं । वे वर्दी में नहीं हैं । समय–दिन)

एक—नयी तरह के कारतूस फिर जारी किये गये हैं । सुना है कलकत्ते के कारखाने में गायों की चरबी में बनाये जा रहे हैं !

दूसरा—जीते जी तो इन कारतूसों को छुयेंगे नहीं ।

एक—अब तो सहा नहीं जाता ।

दूसरा—जरा ठहरो । समय आ रहा है । फिलहाल मनाई है । मुखिया लोग इलाज सोच रहे हैं !

एक—खाक सोच रहे हैं ! जब धर्म ही न रहेगा तब आयेंगे हकीम जी इलाज करने !!

दूसरा—उतावली करने से काम बिगड़ जावेगा । बङ्गाल-पल्टन में पांडे ने कुछ साहबों को मारमूर दिया, खुद मारा गया, कोई नतीजा नहीं हुआ ।

एक—कूड़ा-कर्कट हम साफ करें और मोटी तनख्वाहें मारें ये अंग्रेज, इनकी लड़ाइयां हम लड़ें अपने ही देश वालों के खिलाफ और मौजें मिलें इनको ! शराब गटकी, कलब घर में पहुँचे और नाचे मटके !! छावनी में हम लोगों से कहा डैमफूल !!! जरा सा भी अदब तहजीब तो नहीं !!!

दूसरा—तबाह कर दिया, तबाह ! जरा ठहरो । (कान लगाता है। नेपथ्य में घुँघरू से नाचने का शब्द सुनाई पडता है) वह कितना अच्छा नाचती गाती है ! चलो न वहां ?

एक—नाचती गाती है और बातें भी कितनी मीठी और प्यारी कहती है । चलो । (नेपथ्य की ओर देखकर) वह शायद यहीं आ रही है ।

(जूही नाचती गाती हुई आती है । उसके पीछे-पीछे कुछ सिपाही आते हैं)

❀ गीत ❀

मेरा मन कहां गया रे ?

कलियों ने पाला, फूलों ने पोसा,
सूखी पखुरियों मे समा गया रे;
मन मेरा........

ऊँचे नीचे पर्वत, लम्बे चौड़े खेत
गहरी भरी नदियों को छोड़ गया रे;
मन मेरा........

पेड़ों ने रोका, थपेड़ो ने टोका,
बाहर के बन्धन में सीज गया रे;
सीज गया रे !
कहां गया रे ?
मन मेरा कहां गया ?

एक सिपाही—वाह ! वाह !! खूब !!! मन सीज गया रे, कहां गया रे ? बहुत अच्छा ।

जूही—कुछ पैसे मिल जायें ।

एक सिपाही—जरूर तुम्हारे नाच-गान से बड़ा चैन मिलता है ।

जूही—जब सबको चैन मिले तब तो ?

एक—कैसे, बतलाओ न ?

जूही—कमल के फूल को देखा है ।

सब— देखा है। फिर ?

जूही—वह क्या कहता है ?

एक—क्या कहता है ?

जूही—वह कहता है मेरे रंग में मिल जाओ। वैरियों को मारो फिर भी मेरे जैसे सुन्दर, सदय और कोमल बने रहो।

कुछ सिपाही—हुं !!!

जूही—कमल आयगा। एक दिन छावनी में घूमेगा। रोटी भी आयगी। कमल क्रांति का उगारा है। रोटी देश के पेट का सवाल है, पेट का संकेत है। जिसको बाहर वालों ने धर दबाया है, उसका उद्धार करो। कमल कहता है मेरी तरह के होकर, मेरे रङ्ग में रङ्गकर, मेरी प्रकृति मे घुलकर। (नेपथ्य की ओर देखकर और कांपकर, फिर तुरन्त स्थिर होकर) अरे वह आ रहा है !!!

(जूही नृत्य-गान कर उठती है) मेरा मन कहां गया रे ?

(एक अङ्गरेज़ फ़ौजी अफ़सर आता है। सिपाही घबरा उठते हैं। जूही रुक जाती है)

अफ़सर—हां, हां, नाचे जाओ।

(जूही फिर नाचने गाने लगती है परन्तु उतने उत्साह से नहीं)

अफ़सर—(थोड़ी ही देर बाद) बहुत हो गया। (जूही नृत्य-गान बन्द कर देती है) तुम छावनी से कितना पैसा कमा ले जाती हो ?

जूही—जब जो मिल जाय हुजूर।

अफसर—नाचने गाने के सिवाय कोई और पेशा करती हो ? तुम वेश्या हो ?

जूही—नही तो। मै अविवाहित हूँ। कुमारी।

अफ़सर—तुम लोगों मे विवाह भी होते है ?

जूही—अवश्य।

अफ़सर—तुम रानी साहब के महल मे भी नाचने-गाने जाती हो ?

जूही—(आश्चर्य के साथ) रानी साहब ! नहीं तो। मैं तो कभी नहीं गई। वे तो भजन-पूजन करती रहती हैं !

अफ़सर—रानी साहब ने तुमको घोड़े की सवारी नहीं सिखलाई?

जूही—मैं उनके पासही नही जाती। घोड़ेकी सवारी क्यों सिखलातीं?

अफ़सर—और औरतों को तो सिखलाती है ?

जूही—सुना है—मुझको क्या मालूम ?

अफ़सर—हां ! हां !! मोतीबाई नाम की वेश्या को जानती हो ?

जूही—वह वेश्या नहीं है। आपसे किसने कहा ?

अफ़सर—मुझसे सवाल करती है ! जानती है कि धक्के देकर निकलवा दूँगा !!

जूही—मैंने आपका क्या बिगाड़ा है ?

अफ़सर—हमारा कुछ बिगाड़ सकती है ? यहां क्यों आती है ?

जूही—पेट भरने। कुछ पैसे मिल जाते हैं।

अफ़सर—सिपाहियों को बिगाड़ने आती है।

(सिपाही रुष्ट दृष्टि से एक दूसरे की ओर देखते हैं)

जूही—मैं तो केवल नाचने गाने का काम करती हूं।

अफ़सर—हट यहां से। फिर कभी आई तो कोड़ों से पिटवाऊंगा। कमबख्त कहीं की। भाग यहां से !!

(जूही उसके सामने बहुत घबराया हुआ चेहरा बनाती है। जब उसकी ओर से मुंह फेर लेती है तब मुस्कराती हुई जल्दी जल्दी चली जाती है।)

अफ़सर—तुम सब लोग बेवकूफ हो। बिलकुल गधे। लाइन इन ! (कतार बाँधकर खड़े होओ !)

(सिपाही क़तार बांधकर खड़े हो जाते हैं)

अफ़सर—तुम लोगों को शर्म आनी चाहिये। परेड में बड़े-बड़े टीके तिलक लगाकर आते हो और बारकों में वेश्याओं को आने देते हो!

(सिपाही सिर नीचा कर लेते हैं)

अफ़सर—[illegible] (सिपाही चुप रहते हैं)

अफ़सर—[illegible]

सिपाही—हाँ।

अफ़सर—[illegible]

(सिपाही [illegible] बाँधे हुये तेज़ी के साथ आते हैं। उनके पीछे अफ़सर जाता है। [illegible])

पाँचवाँ दृश्य

(स्थान—झाँसी का जेल। जेल शहर के बाहर की सड़क पर है। फाटक बन्द है। भीतर चहल-पहल है। सन्तरियों के टहलने का शब्द हो रहा है। समय—दिन।)

नेपथ्य से—साहब के आने का समय हो गया है। गुल-गपाड़ा बन्द करो।

(कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर आते हैं। उनके आते ही जेल का फाटक खोलकर जेलर बाहर आता है और प्रणाम करता है। जेलर मुसलमान है, दाढ़ी रखाये हुये है जिसके सिरे कानों पर उमेठ कर चढ़ाये हुये है।)

कमिश्नर—तुम जेलर है ?

जेलर—हुजूर।

कमिश्नर—दाढ़ी को नीचा करो। डाकू बनकर हमारे सामने कभी मत आया करो। बद्‌तमीज।

(जेलर दाढ़ी छुटकाकर नीची कर लेता है और सिर झुका लेता है)

कमिश्नर- हम सागरसिंह डाकू को देखना मागते है।

जेलर—हुजूर। (जेलर मार्ग दिखलाता हुआ उन दोनों को जेल के भीतर ले जाता है। भीतर अनेक कैदी हैं जो हथकड़ियां और बेड़ियां पहिने हैं।)

कमिश्नर—सागरसिंह इनमें से कौन है ?

(सागरसिंह सामने आता है। वह हट्टा-कट्टा पुरुष है। दाढ़ी रखाये है। आखों में काइयांपन और क्रूरता है, सटे हुये ओंठों पर दृढ़ता और अभिमान)

कमिश्नर—तुम्हारा क्या नाम है ?

सागरसिंह—आपको मालूम नही ?

कमिश्नर—तुम्हारे मुंह से सुनना चाहता हूँ।

सागरसिंह—बरवासागर के पास, यहां से चौदह मील गांव है। वहां का रहने वाला हूँ।

कमिश्नर—तुमने यह पेशा क्यों अपनाया ?

सागरसिंह—क्योंकि इससे बढ़िया और कुछ नहीं मिला।

कमिश्नर—हमारी फ़ौज में नौकरी क्यों नहीं कर ली ? अच्छा वेतन मिलता है।

सागरसिंह—हमारे घराने में अफ़सरी होती आई है। मैं कोरी सिपाहीगीरी करता !

कमिश्नर—तुम धीरे-धीरे सूबेदार तक हो सकते थे।

सागरसिंह—हमारे पुरखों की मातहती में पाँच-पांच हजार सिपाहियों ने काम किया है। सेनापतियों के घराने के होकर हम हवलदारी सूबेदारी करते ?

कमिश्नर—ओह ! जनरल बनना चाहता था !!

सागरसिंह—क्यों जन्डैल बनना कोई बड़ी बात है ?

कमिश्नर—डाकू से जनरल ! इस प्रदेश में सब अजीब ही अजीब हैं। जनरल डाकू हो जाता है तब डाकू से जनरली की तरक्की मामूली है। तुमको मालूम है सागरसिंह..........?

सागरसिंह—कुंवर सागरसिंह कहिये। मुझको अकेले नाम से कोई नही पुकारता।

कमिश्नर—ओह! ओह!! अच्छा कुंवर सागरसिंह तुमको मालूम है कि इसी क़ैदखाने मे फांसी घर है और मुझको फांसी देने का अधिकार है। परसों तुमको फांसी दी जायगी—कल तुम्हारा मुकद्दमा होगा।

सागरसिंह—मुझ अकेले कुंवर सागरसिंह को?

कमिश्नर—तुम्हारे साथ और कौन कौन है?

सागरसिंह—बहुत से है।

कमिश्नर—नाम बतलाओ। बतलाओगे न?

सागरसिंह—क्यों बतलाऊं? क्या पड़ी है? फांसी तै है, मुक़द्दमे का तो ढकोसला है। फाँसी की बात पहले मुक़द्दमे की बात पीछे!!

कमिश्नर—यदि सच-सच बतला दोगे तो फ़ायदा ही फायदा है। तुम्हारे बयान से अगर तुम्हारे साथी पकड़े गये तो तुम छोड़ दिये जाओगे: कुछ इनाम भी मिलेगा।

सागरसिंह—बतला दूंगा, परन्तु इन हथकड़ियों, बेड़ियों के बोझ के मारे और भूखों-प्यासों अक़ल बिगड़ गई है। आज ज़रा आराम मिल जाय तो कल सबेरे ही बतला दूंगा। आप अपने वचन पर पक्के रहना।

कमिश्नर—जरूर। (कमिश्नर संकेत से जेल-दरोगा को अपने निकट बुलाता है) कुंवर सागरसिह का बोझ हलका कर दो और अच्छा खाने को दो। हम सवेरे फिर आयेंगे। अच्छा सागरसिह कुं० सागरसिंह, सवेरे सब बात बतलाओ।

सागरसिंह—बहुत अच्छा हुजूर।

(कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर जाते हैं। उनके चले जाने पर दरोगा सागरसिंह का बोझ हलका कर देता है—हथकड़ी बेड़ियां खोल देता है।)

जेलर—कुंवर साहब, मैं आपके लिए ब्राह्मण के हाथ का बनाया हुआ बहुत बढ़िया खाना अभी मँगवाता हूँ।

(जेलर जाता है। सागरसिंह सीटी बजाता हुआ टहलने लगता है। जेलर एक ब्राह्मण रसोइये के हाथों बढ़िया भोजन लिवा जाता है। सागरसिंह खाता है और पानी पीकर निश्चिन्त होता है।)

जेलर—आपके साथ कितने आदमी थे, कुँवर साहब ?

सागरसिंह—कम से कम सत्तर, पचहत्तर है—जैसे हमारे नातेदार मात्र हमारे साथ है। हमारा राज्य फिर किसी दिन होगा दरोगा जी।

जेलर—जहां आपकी आँख पड़ जाय वहीं आपका राज है कुँवर साहब।

सागरसिंह—अब मुझे चैन से लेट जाने दीजिए। आराम के साथ सब के नाम सोचूंगा। कल साहब को सवेरे ही बतलाना है न ?

जेलर—बहुत अच्छा, मैं जाता हूँ। राम, राम कुँवर साहब। सिपाही मेरे साथ आवें सब क़ैदियों को लेकर। कुँवर साहब को आराम करने दो।

(जेलर सिपाहियों और अन्य क़ैदियों के साथ जाता है। सागरसिंह लेट जाता है। करवटें ले लेकर कभी गाता है, कभी सीटी बजाता है। फिर खड़े होकर इधर उधर आंख पसारता है। अपने को सुरक्षित समझ कर जेल से निकल भागता है। जेल में हड़बड़ हो उठती है। सागरसिंह की खोज की जाती है। वह नहीं मिलता है। जेलर बहुत परेशान होता है।)

छटवाँ दृश्य

[स्थान—महल के सामने रानी का पुस्तकालय और पुस्तकालय के आगे रानी का बगीचा। लक्ष्मीबाई और मुन्दर पुरुष सैनिक के वेश में आती हैं। उनके केश पीछे की ओर साफे के बाहर कुछ निकले हुये हैं। दोनों कमर में तलवार और पिस्तौल लटकाये हुये हैं। समय—दिन।]

लक्ष्मीबाई—सुन्दर, अंग्रेजों की समझ में क्या यह छोटी सी बात भी नहीं आती कि हिन्दू विधर्मी नहीं हो सकते ?

सुन्दर—वे मदान्ध हैं और अहमक। देखिए न, अंग्रेज़ों ने उस दिन [illegible] बालिका की ओर [illegible] से आगे जब राजा [illegible] [illegible] गया था।

लक्ष्मीबाई—वह किसी समय अपने किले के एक फाटक का [illegible] था।

सुन्दर—और [illegible] समझ के कुरते को पालकी पर से उतार दिया! जिसको कोई भी हिन्दू राजा स्वप्न में भी नहीं कर सकता।

लक्ष्मीबाई—अब घड़ा भर गया है सुन्दर।

(नेपथ्य में जनता के एक समूह का फाग-गीत सुनाई पड़ता है। जो खोंटे पर आंगन की कमाची की चोट के स्वर और छोटी सी ढोलकी के ताल पर गाया जा रहा है। गीत पहले निकट सुनाई पड़ता है और फिर दूर में हटता हुआ विलीन हो जाता है। लक्ष्मीबाई और सुन्दर ध्यान से सुनती हैं।)

सुन्दर—सरकार, कितने सीधे सादे स्वर हैं ये।

लक्ष्मीबाई—विधर्मी होने के बाद फिर ये क्या कभी अपनी फागें गा सकेंगे ? इनके बच्चे गिल्ली-डण्डा और कबड्डी छोड़कर फिर क्या खेलेंगे ? होली, दिवाली, दशहरा यहा से सब चल देंगे ? स्त्रियां ऐसी सुन्दर वेशभूषा छोड़कर कौन सा स्वांग बनावेंगी ? गीता, रामायण इत्यादि का क्या होगा ? (पुस्तकालय की ओर देखकर) इन पुस्तकों को क्या दीमक खायगी ? अथवा क्या ये भस्म कर दी जायेंगी ? सुन्दर, अब समय आ गया है। मैं लड़ूगी अपनी जनता के लिए, उसकी कला और संस्कृति के लिए, उसके धर्म के लिए मरूंगी। सुन्दर, वेद, शास्त्र, पुराण, गीता सब अमर हैं। इनको कोई नही मिटा सकेगा ! कभी नही !! कभी नही !!!

सुन्दर—(धीमे स्वर में) सरकार ने इसी के लिए तो आज लक्ष्मी-सेना के अफ़सरों को बुलाया है।

लक्ष्मीबाई—(बहुत धीमे स्वर में) हाँ मुन्दर, मैं भूली नहीं हूँ। अंग्रेजों के हाथ से अपने लोगों का अपमान न सह सकने के कारण जी भर भर आता है। (साधारण स्वर में) जवाहरसिंह, रघुनाथसिंह इत्यादि को भी बुलाया है।

मुन्दर—सरकार, पहले स्त्री अफ़सरों को आपका निरीक्षण करना है।

[नेपथ्य में पैरों की आवाज़ सुनाई पड़ती है। लक्ष्मीबाई उसी ओर देखने लगती हैं। उसी समय पुरुष योधा के वेश में राधारानी बख्शिन, सुन्दर, काशी, मोती और जूही आती हैं। वे क़तार में आती हैं और क़तार में खड़ी हो जाती हैं। उनकी वर्दी अफ़सरों की है, रङ्ग लाल, तलवारें और पिस्तौलें लिए हैं। लक्ष्मीबाई उन सबका निरीक्षण करती हैं। वे फ़ौजी प्रणाम करती हैं। लक्ष्मीबाई प्रति-नमस्कार देती हैं।)

लक्ष्मीबाई—समय आ रहा है। इकत्तीस मई ग्यारह बजे दिन। अपनी सेना के साथ तैयार रहना। नियन्त्रण, व्यवस्था और अनुशासन में कमी न आने पावे। जब तक मेरी आज्ञा न मिल जावे हथियार पर हाथ न डालना। इकत्तीस तारीख़ के लिए तैयार रहना।

सब—जो आज्ञा।

लक्ष्मीबाई—तुम लोगों को तोप का चलाना भी शीघ्र सिखलाया जावेगा।

सब—हम सब सीखेंगी।

लक्ष्मीबाई—अपने आदर्श के लिए, अपनी बात के लिए, अपनी आन पर बलिदान होने के लिए तैयार हो? तुम्हारी सेना तैयार है?

सब—तैयार है।

लक्ष्मीबाई—तो परमात्मा का नाम लो और प्रण को प्राणों की गांठों में बांधो। हर हर महादेव!

सब—हर हर महादेव! हर हर महादेव!! हर हर महादेव!!!

लक्ष्मीबाई—अब चुपचाप महलों में चलो।

(गंगा जाता है। लक्ष्मीबाई और सुन्दर रह जाती हैं। दूसरी ओर से जवाहरसिंह और रघुनाथसिंह आते हैं। वे लक्ष्मीबाई को फौजी प्रणाम करते हैं।)

लक्ष्मीबाई—समय आ रहा है जब जोर से काम करने की आवश्यकता है। जैसे ही मेरा समाचार पहुँचे सवारों और पैदलों को तैयार हो जाना।

दोनों—जो आज्ञा।

लक्ष्मीबाई—संयम और अनुशासन से काम लिया जाये।

(वे दोनों मूठ की ओर से लक्ष्मीबाई को अपनी तलवारें नज़र करते हैं।)

लक्ष्मीबाई—(तलवार सिर से लगाकर नमस्कार करके) शपथ लो कि तुम्हारी तलवार प्रजा पीड़न और किसी भी बुरे काम में कभी उपयोग नहीं की जायेगी।

दोनों—हम लोग शपथ लेते हैं।

लक्ष्मीबाई—अब परमात्मा का नाम लो और उस पल की प्रतीक्षा के लिए अपने ठौर पर जाओ। हर हर महादेव!

दोनों—हर हर महादेव! हर हर महादेव!! हर हर महादेव!!!

(वे दोनों जाते हैं)

लक्ष्मीबाई—परदेसियों को हराया गया है और फिर हराया जा सकता है। क्यों सुन्दर?

सुन्दर—हां सरकार।

लक्ष्मीबाई—अब महल चलो। कुछ लिखा-पढ़ी का काम करना है।

(दोनों जाती हैं)

सातवां दृश्य

[स्थान—झांसी के बाहर अङ्गरेज़ी फ़ौज की छावनी। नेपथ्य में हल्लाचाला मचा हुआ है। 'मारो, मारो' 'भागो, बचो' की पुकारें लग

रही हैं। बन्दूकें तलवारें लिये हुये कभी हिन्दुस्थानी सिपाही और कभी अङ्गरेज़ अफ़सर आते और चले जाते हैं। कोई रुष्ट, कोई खीझे हुये और कोई चिन्तित। कुछ देर तक ऐसा होता रहता है। इसके बाद नैपथ्य में बन्दूकों के चलने की आवाज़ होती है। दो अङ्गरेज़ अफ़सर आते हैं। वे घबराये हुये हैं। समय दिन।

पहला—बच्चों और औरतों को कहां भेजा जाय ? रानी के महल में ?

दूसरा—तारा-गढ़ पास है, बिलकुल छावनी के सिरे पर, पर उसको बाग़ियों ने घेर लिया है। महल दूर है, क़िला पास।

पहला—महल ठीक रहेगा। रानी बहादुर और नेक है।

दूसरा—बाग़ी महल को घेर लेंगे। उनके पास तोपें भी हैं। क़िले में ले चलना चाहिये बाल बच्चों को। या ऐसा करो—तुम रानी के पास जाओ। मैं क़िले को संभालने की कोशिश करूँगा। कुछ राजभक्त सिपाही अब भी अपने पास हैं। उनको क़िले में भेजे देता हूँ। फिर जहाँ मन भरेगा बाल बच्चों को पहुँचा देंगे।

(नेपथ्य में फिर धड़ाके होते हैं)

पहला—अब एक पल भी देर नहीं करनी चाहिये। चलो·······

दूसरा—चलो······नवाब अलीबहादुर को भी खबर भेजता हूं। उनका कारिन्दा पीरअली आया था। दतिया और ओर्छा से मदद मँगाने की बात कहता था। शायद वहां से कुछ फौज आ जाय।

(नेपथ्य में फिर शोर होता है)

दोनों—चलो। (नेपथ्य की ओर देखकर) वे लोग इसी तरफ़ आ रहे हैं।

(वे दोनों तेज़ी के साथ जाते हैं। दूसरी ओर से कुछ हिन्दुस्थानी सिपाही आते हैं। 'कहां गये वे शैतान ? कहां गये वे शैतान, चिल्लाते हुये वे इधर-उधर दौड़ पड़ते हैं)

आठवाँ दृश्य

[स्थान—झांसी नगर में चौड़ी सड़क पर रानी लक्ष्मीबाई के महल का ऊपरी भाग। खिड़कियां बन्द हैं महल का फाटक बन्द है। कुछ सिपाही नङ्गी तलवारें लिये हुये आते हैं जो खून से भीगी हुई हैं। समय दिन।]

कुछ सिपाही—शहर में कहीं छिपे मिले तो यहां भी मारो!

कुछ और सिपाही—बनियों को लूट लो।

कुछ और—अनाज की दूकानें हाथ में कर लो।

कुछ और—अब हमारा राज्य हो गया है।

कुछ और—जो हमारी न माने उसको खतम कर दो।

(इन सिपाहियों का रिसालदार आता है। वह मुसलमान है। दाढ़ी नहीं रक्खे है। मूँछे लम्बी हैं। उसके आते ही सिपाही चुप हो जाते हैं)

रिसालदार—खलक खुदा का, मुलक बादशाह का, राज रानी लक्ष्मीबाई का।

(तलवार को ऊपर उठाकर तीन बार महल के फाटक के सामने कहता है। सिपाही 'महारानी लक्ष्मीबाई की जय' चिल्लाते हैं। और सिपाही आकर इकट्ठे हो जाते हैं। ऊपर की खिड़कियां खुलती है। हाथ जोड़कर नमस्कार करती हुई लक्ष्मीबाई दिखलाई पड़ती हैं। पीछे सशस्त्र सखियां। लक्ष्मीबाई हीरों का कण्ठा पहिने हुये हैं। सिपाही फिर 'महारानी लक्ष्मीबाई की जय' का नारा लगाते हैं। रानी फिर नमस्कार करती हैं और चुप रहने के लिये हाथ का संकेत करती हैं। रिसालदार आगे बढ़ता है।)

लक्ष्मीबाई—क्या है? क्या तुम रिसालदार कालेखां हो?

रिसालदार—(फौजी प्रणाम करने के बाद) हुजूर का ताबेदार कालेखां रिसालदार मैं ही हूँ।

लक्ष्मीबाई—(रिसालदार की आंख में आंख मिलाकर—रिसालदार की आंख नीची पड जाती है) इन तलवारों में रक्त कैसे लगा?

रिसालदार—हुजूर, श्रीमन्त सरकार, अंग्रेजों ने हमारे साथ लगातार बुरा सलूक किया। सिपाहियों ने उनको मार डाला।

सिपाही—और उनके बाल-बच्चों को भी।

लक्ष्मीबाई—(तीव्र स्वर में) इन्हीं कर्मों से स्वराज्य और बादशाही स्थापित करोगे ? तुमको लाज आनी चाहिये ! तुम लोगों ने घोर दुष्कर्म किया है !! क्या तुम समझते हो कि संसार से सब नियम-संयम उठ गये ? ऊँचे आदर्श की प्राप्ति के लिये नीचे उपाय का प्रयोग, महायज्ञ की साधना के लिये पलित अनुष्ठान का उपयोग, शान्त निद्रा के लिये नशे का काम में लाना, क्या कभी भी उचित कहे जा सकते हैं ?

(सिपाही सहमकर तलवारें और सिर नीचे कर लेते हैं)

रिसालदार—हुजूर...... ....

लक्ष्मीबाई—और, तुम लोगों में से कुछ झांसी नगर को लूटने की भी चर्चा कर रहे थे ! तुम अपने को इतना भूल गये ! क्या तुमको यही सिखलाया गया है ?

रिसालदार—हुजूर के हुकुम के खिलाफ़ अगर आगे कुछ भी हो तो हम सब तोप से उड़ा दिये जायें। जो आज्ञा हो हम सब उसका पालन करेंगे।

लक्ष्मीबाई—तो मैं यह कहती हूँ कि छावनी को लौट जाओ। सोचकर संध्या तक आज्ञा दूंगी कि आगे तुमको क्या करना है।

रिसालदार—(सिपाहियों से) क्या कहते हो ?

कुछ सिपाही— छावनी को चलो।

कुछ और—दिल्ली चलो। वहां मजा रहेगा।

कुछ और—कुछ रुपया तो गांठ में करलो।

कुछ और—शहर से रुपया उगाओ।

कुछ और—झांसी को रानी साहब के हवाले करके दिल्ली चलो।

} जल्दी जल्दी

रिसालदार—(सिपाहियों से) सब चुप रहो ! (लक्ष्मीबाई से) सरकार, सिपाही भूखे हैं।

लक्ष्मीबाई—अंग्रेजों ने मेरे पास रुपया नहीं छोड़ा। हमारा रुपया आगरे के खजाने में जमा है। कहां से रुपया लाऊं ?

रिसालदार—आप मालिक हैं—हम लोग मजबूर हैं। कहीं न कहीं से हमको गुजर के लिये रुपया चाहिये।

(लक्ष्मीबाई अपना हीरों का कण्ठा उतार कर रिसालदार की अञ्जलि में डाल देती हैं। वे सब 'महारानी लक्ष्मीबाई की जय' कहके प्रणाम करते हैं।)

लक्ष्मीबाई—इससे तुम्हारी सारी अटकें पूरी हो जायेंगी। मनुष्यों की तरह यहां से जाओ और अदब कायदे के साथ दिल्ली पहुँचो। कहीं भी लूटमार मत करना। हिन्दुओं को गंगा और मुसलमानों को कुरान की सौगन्ध है।

वे सब—हमलोग सौगन्ध खाते हैं।

(सब प्रणाम कर 'महारानी लक्ष्मीबाई की जय' कहते हुये जाते हैं उनके जाते ही कुछ नगर-निवासी भी आकर जय जयकार करते हैं।)

लक्ष्मीबाई—(हाथ जोडकर) झांसी का क्या किया जाय ? तुम लोगों की क्या इच्छा है।

वे सब—महारानी साहब हमारी हैं। हम महारानी साहब के हैं। हमारा राज्य हो गया। महारानी साहब बन्दोबस्त करें।

लक्ष्मीबाई—हाँ तुम्हारा राज्य, हम सब का राज्य, स्वराज्य। तुम लोगों की मर्जी है मैं राज्य की बागडोर हाथ में लूं ?

वे सब—अवश्य, सरकार, अवश्य।

लक्ष्मीबाई—अच्छा, तो जाओ, अपना अपना काम देखो और बस्ती के मुखियों, पञ्चों और अगुओं से कह दो कि अपने अपने पुरों का प्रबन्ध करें। सांझ साझ तक मेरी सेना आई जाती है। मैं कल ही नगर भर के प्रमुख लोगों को महल में इकट्ठा करूँगी और उनकी सलाह सम्मति से राज का काज चलाऊँगी। (वे सब जय जयकार करते हुये जाते हैं)

लक्ष्मीबाई—मुन्दर तुम रक्सा गाव जाकर तुरन्त जवाहरसिंह इत्यादि को सेना सहित ले आओ।

(यवनिका)

तीसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—रानी लक्ष्मीबाई का महल । लक्ष्मीबाई, मुन्दर, सुन्दर और काशीबाई टहल-टहल करके बातें कर रही हैं । समय रात्रि । ऋतु वर्षा की ।]

काशीबाई—खुदाबख्श को बरुआसागर गये बहुत दिन हो गये हैं । जान पड़ता है कि सागरसिंह पकड़ा नहीं जा सका है ।

लक्ष्मीबाई—मैं इस बरसात के मारे हैरान हूं । कभी रिमझिम तो कभी मूसलाधार बरसता है । बन्द होने का नाम नहीं लेता ।

सुन्दर—कई दिन से सूर्य के दर्शन नहीं हुये । सरकार घुड़-सवारी नहीं कर पाई है ।

लक्ष्मीबाई—खुले तो थोड़ा सा बाहर चलूं फिरूं ।

(मोतीबाई आती है । वह उदास है)

मोतीबाई—सरकार ।

लक्ष्मीबाई—तू मुंह क्यों लटकाये है ? क्या समाचार है ? तुरन्त कह डाल ।

मोतीबाई—सरकार, सागरसिंह के साथ युद्ध हुआ । वह निकल भागा । खुदाबख्श जी घायल होकर बरुवासागर के किले में पड़े हैं । बेतवा नदी इतनी चढ़ी है कि तीन दिन से नाव ही नहीं लगी ! खबर देने वाला बड़ी कठिनाई से यहां तक अभी आ पाया है !!

आती है। सागरसिंह गिरफ्तार किया जाता है। उसको पकड़े हुये [illegible] जाते और सुन्दर आती है।

सुन्दर—[illegible]

सागरसिंह—ओफ! आखिर को महारानी!! आपने!!! [illegible] हुई!!!! कलंकित हुई!!!!! [illegible] दुनिया [illegible] हुई [illegible]!!!!!

लक्ष्मीबाई—इसको नवाबगंज ले जाओ। वहाँ इसका न्याय करूँगी।

[सब चले जाते हैं। नेपथ्य में घोड़ों और ऊँटों का शब्द होता है और जा रहे हैं। कुछ देर ऐसा [illegible] आता है]

तीसरा दृश्य

[स्थान—नवाबगंज के किले का भीतरी भाग। सब्ज़ ज़मीन है। एक ओर नीचे कुछ सैनिक बैठे हैं व पुरुष सैनिकों के वेश में नहीं हैं। समय—दिन।]

एक सैनिक—गुसाइयों आदमी तो गये, सागरसिंह का गिरोह है प्रबल।

दूसरा—परन्तु अब अपनी रानी के पराक्रम से उसका बच निकलना सम्भव नहीं।

पहला—बरसात के दिन हैं, जंगल घनी है, गिरोह भी भारी है, गिरफ्तार करना शायद आसान न हो।

तीसरा—तुम्हारा ढीलापन ही तुम्हारे मन में संदेह उत्पन्न करता है। सागरसिंह का बच जाना असम्भव है। मैं तो रानी के शौर्य......

(नेपथ्य मे कुछ पैरों की आहट होती है व उसी ओर देखने लगते हैं। सैनिक वेश में रानी का सहेलियों सहित प्रवेश। सैनिक उठ खड़े होते हैं। रानी ऊंचे आसन पर बैठती हैं। मुन्दर, सुन्दर, काशीबाई और मोतीबाई भी अपने अपने स्थान ग्रहण करती हैं। वे भी पुरुष वेश मे हैं।)

लक्ष्मीबाई—सागरसिंह को पेश करो।

(सागरसिंह पहेरे में लाया जाता है।)

(लक्ष्मीबाई के आंख मिलाते ही सागरसिंह झुक कर प्रणाम करता है और उनके पैरों की ओर हाथ बढ़ाता है मानो पैर छूना चाहता हो। पहेरेदार जकड़ लेते हैं।)

लक्ष्मीबाई—तुम्हारा नाम ?

सागरसिंह—कुँवर सागरसिंह, श्रीमन्त सरकार।

लक्ष्मीबाई—(मुस्कराकर) कुँवर सागरसिंह !!!

(उस मुस्कराहट से सागरसिंह कांप जाता है)

लक्ष्मीबाई—कुँवर होते हुये यह निकृष्ट आचरण कैसा ?

सागरसिंह—सरकार, हमारा वंश सदा लड़ाइयों में भाग लेता रहा महाराज ओर्छा की सेवा में लड़ा। महाराज छत्रसाल की सेवा में रह कर युद्ध किये। मेरे पुरखे सेनाओं के नायक रह कर इस देश की रखवाली पर अपना खून चढ़ाते रहे। जब अंग्रेज आये हम लोगों ने उनकी आधीनता अङ्गीकार नहीं की। हमको दबाया गया। हम बिगड़ खड़े हुये। और डाके डालने लगे। परन्तु सरकार मैं अपने लिये और अपने साथियों के लिये गङ्गा जी की शपथ लेकर कह सकता हूँ कि हम लोगों ने स्त्रियों और गरीबों को कभी नहीं सताया !

लक्ष्मीबाई—इन दिनों तुम लोगों ने जिन पर डाके डाले वे सब मेरी प्रजा हैं और जैसे गरीबों की रक्षा का भार मेरे ऊपर है, उसी प्रकार धन सम्पत्ति वालों की रक्षा का भी। डाके के लिये दण्ड प्राणों का है। तैयार हो जाओ। तुम्हारे साथी भी न बचेंगे और न तुम्हारे और उनके घर। मिट्टी में मिलवा दूंगी।

सागरसिंह—(कनखियों इधर-उधर देखकर और लक्ष्मीबाई की बड़ी आंखों में करालता का अनुभव करके) सरकार, मैं कुछ प्रार्थना कर सकता हूँ ?

लक्ष्मीबाई—कहो।

लक्ष्मीबाई—वे कहते थे कि झांसी अंग्रेजी राज्य का अङ्ग है ! आप लोगो के होते हुए मैं उस दावे को कैसे मान लेती ?

मुखिया—सरकार, झांसी झांसी की ही है।

(एक विनती वाला आता है)

विनती वाला—सरकार मैं दरिद्र ब्राह्मण हूं। दूर से आया हूँ।

लक्ष्मीबाई—क्या बात है पण्डित जी ?

विनती वाला—मेरी पत्नी मर गई। मुझको ब्याह करना है। लड़की वाला बिना रुपया लिये ब्याह करने को राजी नही है। सरकार, चार सौ रुपया की अटक है।

लक्ष्मीबाई—(एक ओर तककर) रामचन्द्र देशमुख ! कुवर रामचन्द्र राव !!

(रामचन्द्र देशमुख जो 'कुंवर' मण्डली का एक सदस्य है, आगे आता है)

रामचन्द्र देशमुख—आज्ञा सरकार ?

लक्ष्मीबाई—इस ब्राह्मण को खजाने से पांच सौ रुपया दे देना।

रामचन्द्र देशमुख—जो आज्ञा।

(ब्राह्मण उन्मत्त सा हो कर जय जयकार करता है)

लक्ष्मीबाई—देखो पण्डित जी, अपने ब्याह के समय मुझको न्योता देना न भूल जाना।

ब्राह्मण—(आश्चर्य के साथ) ऐं सरकार !!

(बाजार के लोग हंस पड़ते हैं। उसी समय कुछ अधनङ्गे गरीब आते हैं।)

लक्ष्मीबाई—(उनकी ओर देखकर) क्यों क्या बात है ? क्या कहना चाहते हो ?

उनमेंसे कुछ—हमारे पास कपड़ा नही है। हम ठण्डों मरे जा-रहे है।

लक्ष्मीबाई—देशमुख, झाँसी में जितने इस तरह के लोग हों सब को एक एक कम्बल देने का शीघ्र प्रबन्ध करो और सबको एक एक सलूका बनवा दो।

रामचन्द्र देशमुख—जो आज्ञा सरकार।

बाजार के सब—महारानी लक्ष्मी बाई की जय।

(लक्ष्मीबाई मन्दिर की ओर जाती हैं)

सातवां दृश्य

(स्थान—रानी का महल। वसन्त ऋतु। एक ओर से मुन्दर आती है, दूसरी ओर से सुन्दर आ रही है। समय दिन।)

मुन्दर—महारानी साहब पूजन में हैं। अंग्रेज लोग विना किसी विघ्न वाधा के बढते चले आ रहे हैं! (सुन्दर दूसरी ओर से आ जाती है) सुन्दर, सुन्दर अंग्रेज बेतवा पार करके बबीना तक आ गये हैं! झांसी से केवल १७, १८ मील दूर!!

सुन्दर—सामना किया जायगा। क्या हाल ही में कोई समाचार आया है?

मुन्दर—दीवान और सब सरदार तथा नगर के पंच मुखिया आये हैं। अंग्रेजों के जनरल की चिट्ठी आई है। चिट्ठी क्या चिनौती है!

सुन्दर—महारानी साहब आ रही हैं। गीता का पाठ कर रहीथी।

(लक्ष्मीबाई का प्रवेश)

लक्ष्मीबाई—क्या चिट्ठी आई है, मुन्दर?

मुन्दर—यह है चिट्ठी सरकार। अंग्रेज जनरल ने भेजी है।

लक्ष्मीबाई—क्या चिनौती है उसमें?

मुन्दर—मै दीवान और सरदारों को न बुला लाऊं? वे सब बारहदरी में इकट्ठे हैं।

लक्ष्मीबाई—बुला लाओ। (मुन्दर जाती है)

लक्ष्मीबाई—अब तुम लोगों की शूरवीरी और हथियारों की परीक्षा का समय आया। यह अच्छा हुआ कि तुम सबको मैंने तोप चलाना भी

सिखलवा दिया है। लड़ाई में, मोर्चों का संभालना, शत्रु के दावपेच को समझकर अपनी योजना की काट-कतर करना, बढ़िया हथियार और सिपाहियों में नियम अनुशासन, ये पहले हैं। और सब पीछे।

सुन्दर—हम सब नरनारी तैयार हैं। सरकार।

लक्ष्मीबाई—कुछ थोड़ा समय और मिल जाता तो मैं इस प्रदेश भर के नर नारियों को तैयार कर देती। और इतना गोला बारूद और अन्य सामान इकट्ठा कर लेती कि अंग्रेजों के मार भगाने में कोई संदेह नहीं रहता। फिर भी, जो कुछ है उसी के बल भरोसे बहुत कुछ किया जा सकेगा। हमको केवल कर्म करने का अधिकार है, उसके फल से कोई सरोकार नहीं।

(सुन्दर के साथ दीवान, सरदार, नगर के पञ्च और मुखिया आते हैं। और अभिवादन करते हैं। नागरिकों को बिठला दिया जाता है। सुन्दर रानी के लिये एक चौकी लाती है। उस पर वे बैठ जाती हैं।)

लक्ष्मीबाई—अंग्रेज जनरल ने चिट्ठी में क्या लिखा है?

दीवान—लिखा है कि आप अपने आठों सरदारों के साथ उसके पास निःशस्त्र जावें। मैं लाला भाऊ बख्शी, दीवान लक्ष्मणराव, काका साहब मोरोपन्त, दीवान जवाहरसिंह, दीवान रघुनाथसिंह, कुँवर खुदाबख्श और मोतीसाई—

लक्ष्मीबाई—(उठी हुई उच्छ्वास को दबाकर) मोती साई !!! मेरे सरदारों मोती साई कौन महाशय है।

(सुन्दर, मोतीबाई इत्यादि पार्श्व में खड़ी हैं सभी उपस्थितों के साथ वे भी हँस पड़ती हैं।)

लक्ष्मीबाई—नाना साहब इस मोतीसाई को कहां से पकड़ बुलाऊं?

नाना भोपटकर—(मुस्कराकर) सरकार की टकसाल में यदि जाली सिक्के ढलते होते तो किसी न किसी को साई का चोगा पहिना दिया जाता।

लालाभाऊ—सरकार अंग्रेजों को क्या जवाब दिया जाय?

मोतीबाई—(पार्श्व में आकर) सरकार मोतीसाई कौन सी बला है? इसका उत्तर क्या होगा ?

लक्ष्मीबाई—मैं बतलाऊंगी (एक क्षण मुस्कराकर और फिर गम्भीर होकर) मैं अकेली उत्तर देने वाली कौन होती हूँ। झांसी के ये सब पंच और अगुये बैठे हैं। इनकी जैसी इच्छा हो। ये कह दें तो मैं अकेली अंग्रेज जनरल के सामने चली जाऊंगी, किसी सरदार के जाने की आवश्यकता न पड़ेगी।

अहीरों का मुखिया—हम लड़ेंगे। अपनी झांसी के लिये, अपनी रानी के लिये हम सब अहीर कट मरेंगे।

महाजनों का पञ्च—हमारे पास जितना रुपया और गहना है स्वराज्य की लड़ाई के लिये, रानी साहब के हाथ संकल्प है। महाजनी का यही प्रायश्चित्त सबसे बड़ा है।

तेलियों का अगुआ—हम दिखला देंगे कि झाँसी का पानी कितना खरा और गहरा है। हम तेली लोग अंग्रेजो की वह पिराई करेंगे कि वे कभी भूलेंगे नही।

काछियों का पञ्च—उत्तर दीजिये कि वैरियों को माँ की छठी के दूध की याद दिलाई जावेगी। हम काछी-काछी ही झाँसी में इतने है कि कुछ दिनों तो अकेले हमलोग ही सामना कर लेंगे।

कोरियों का अगुआ—हम कोरी लोग जब तक है, झाँसी में दुश्मन पैर नही रख सकता।

चमारों का पञ्च—हम चमारों के जीते जी झाँसी का बाल बाँका नही जा सकता।

बाकी सब इकट्ठे—लड़ेंगे। मर मिटेंगे स्वराज्य के लिये। यही उत्तर दीजिये।

लक्ष्मीबाई—यही उत्तर दीजिये, नाना साहब।

भोपटकर—अवश्य।

लक्ष्मीबाई—सबको सावधान कर दीजिये। रसद और लड़ाई का सब सामान बहुतायत में तुरन्त क़िले के भीतर इकट्ठा कर लीजिये। गोला बारूद काफी है न ?

जवाहरसिंह—बहुत काफ़ी सरकार। बख्शी भाऊ ने आध सेर से लेकर पैंसठ सेर तक के गोले तैयार किये है जो निशाने पर लगकर फूटते भी है और फिर उनमें से गोलियां और कीलें सनाती हैं।

लक्ष्मीबाई—अंग्रेजों के साथ कितनी सेना है, कितना सामान है, पीछे के मार्ग से सम्पर्क बनाये रखने का क्या साधन है इत्यादि बातों की जांच के लिये अपना भी कोई जासूस जाना चाहिये।

जवाहरसिंह—हमारे यहाँ पीरअली नाम का एक चतुर कांइयॉ है। वह जासूसी के काम को अच्छी तरह कर सकेगा। मोतीबाई जी भी उसको जानती होंगी।

मोतीबाई—मुझको इनकार नहीं है। शायद काम को अच्छी तरह निभा ले आवे। अंग्रेजों के साथ भोपाल और हैदराबाद रियासतो के भी दस्ते है। मुझको पता लगा है।

लक्ष्मीबाई—अब सब लोग जाओ। दूत को सवेरे रवाना कर दो। उस पीरअली को अभी रात मे ही सब समझा बुझा देना। वह सचेत हो कर काम करे।

(वे सब लोग जाते हैं। केवल स्त्रियां रह जाती हैं)

मोतीबाई—सरकार अपने यहा यह मोतीसाई कौन है।

(मुस्कराती है)

लक्ष्मीबाई—तेरा नाम कैसे सुन्दर रूप में अंग्रेजो के पास पहुँचा है ! मुझको कोई सन्देह नही—मेरे जासूस विभाग के सरदार को ही साई का पद दे दिया गया है।

मोतीबाई—(बनावटी रोष के साथ) सरकार के सामने मेरे मुँह से गाली नही निकलती परन्तु यदि उस अंग्रेज जनरल को पा गई—उस

मुंहझोंसे का नाम रोज है, जनरल रोज—तो तोप, बन्दूक या तलवार से सच्चा नाम लिखे बिना न मानूंगी।

लक्ष्मीबाई—मैंने तो दरबार में बड़ी कठिनाई से अपनी हँसी को रोक पाया। मोतीसाई! यह रहा मोतीसाई!! कैसा बढ़िया नाम है!!! क्या रूप-सरूप है मोतीसाई जी का!!!! (वे सब हँसती हैं)

मोतीबाई—(हँसी को रोककर बनावटी रूआंसे स्वर में) सरकार, मेरी चल नही सकती थी नहीं तो मै चिट्ठी के सिरनामें पर लिखवाती 'मेंम साहब रोज को मोती साईं का सलाम। चुपचाप हिन्दुस्थान को पीठ दिखाओ और अपनी विलायत में झख मारो।'

(सब हँस पड़ती हैं)

लक्ष्मीबाई—(गम्भीर स्वर में) लाला भाऊ आदि दरबारी सोचते होंगे हम लोग क्यों हँस पड़े थे। हम लोगों की हँसी मौत का घूंघट है। और यह बात सब लोगों को शीघ्र मालूम भी हो जायगी। अब तुम लोग अपनी सेना की तैयारी में तुरन्त लग जाओ।

मुन्दर—सरकार नवरात्र भी आ गई है। गौर का पूजन, हल्दी कूं कूं—

लक्ष्मीबाई—हां, वह अवश्य होगा। उसमें सब स्त्रियां एकत्र होंगी। उनको उसी समय लड़ाई की पूरी क्रिया समझा दी जावेगी।

(जूही आती है)

जूही—सरकार, फाटकों का और रसद सामान का प्रबन्ध कर दिया गया है।

लक्ष्मीबाई—अच्छा हुआ। अब चलो, ईश्वर का ध्यान करो और सवेरे से काम में जुट जाओ।

मोतीबाई—सरकार हम लोगों का एक गीत सुन लें, फिर जैसी आज्ञा हो।

लक्ष्मीबाई—अभी? नहीं मोती, अभी नहीं। फिर कभी सुनूंगी।

(आगे आगे रानी जाती हैं, पीछे, पीछे, वे सब)

आठवाँ दृश्य

[स्थान—जङ्गल पहाड़ और झाड़ियों के बीच में ऊबड़-खाबड़ मैदान। एक ओर नदी बह रही है। इस मैदान के एक कोने पर जनरल रोज़ की सेना का शिविर है। समय—दिन।]

(पीरअली और अंग्रेज़ी छावनी का एक हिन्दुस्थानी सिपाही, आते हैं।)

हिन्दुस्थानी सिपाही—हमारा जनरल बड़ा कड़क और बड़ा काबिल सेनापति है। बानपूर के राजा मरदनसिंह और शाहगढ़ के राजा बखतअली को उसने बात की बात में हरा दिया।

पीरअली—झाँसी में मुक़ाबला कड़ा बैठेगा।

हिन्दुस्थानी सिपाही—जनरल के सामने ऐसी बात कहोगे तो मार खाओगे। वैसे भी वह बागियों के साथ राई-रत्ती भर भी रियायत नहीं करता। यहाँ से लौटकर घर जा पाओ तो पीर को मलीदा चढ़ाना।

पीरअली—जनरल साहब क्या दूत को—एलची को भी—मार देंगे।

हिन्दुस्थानी सिपाही—मारें या न मारें वे जानें उनका काम जानें। मैं तुम्हारी इत्तिला किये देता हूँ। यहीं ठहरो।

(पीरअली रुक जाता है। सिपाही जाता है। पीरअली टहलने लगता है। वह अपने कांइयेपन पर आश्वस्त है। थोड़ी देर में जनरल रोज़ अपने एडजुटेण्ट के साथ आता है। रोज़ अधेड़ अवस्था का स्वस्थ सैनिक है। उसकी आंखे तीक्ष्ण हैं, चेहरे पर दृढ़ता और निश्चय है। एडजुटेण्ट युवा अवस्था से कुछ ही आगे है। चुस्त है। पीरअली उन दोनों को प्रणाम करता है।)

रोज़—वैल, तुम कौन हो ?

पीरअली—मैं हुजूर नवाब अलीबहादुर साहब का आदमी हूँ और अंग्रेजी सरकार का खैरख्वाह। पीरअली मेरा नाम है।

(रोज़ अपनी जेब में से एक नोटबुक निकालता है और उसको उलट-पलट कर ध्यानपूर्वक देखता है।)

रोज़—हां, पीरअली, पीरअली। नवाब साहब अच्छी तरह हैं ?

पीरअली—उनकी हवेली जला दी गई। वे मुसीबत में इधर-उधर मारे-मारे फिर रहे हैं। मैं उनका नमक अदा करने के लिये झांसी में रानी साहब की फ़ौज में भर्ती हो गया हूँ; काम सरकार का कर रहा हूँ। और इसीलिये ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूं। मैं झांसी की सब बातें बतलाऊंगा। सबसे पहली बात तो सरकार यह है कि रानी ने औरतों की एक फ़ौज बनाई है। उसकी अफ़सर भी औरतें ही हैं। कोई लफ़टण्ट, कोई कप्तान, कोई कर्नल—

रोज़—Jhansi may prove a tough job. अच्छा यह बतलाओ कि रानी ने अंग्रेज़ बच्चों और स्त्रियों का क़तल करवाया ?

पीरअली—नही हुजूर, नहीं करवाया।

रोज़—वैल, हुं ! लेकिन झांसी के लोगों नें क़तल किया ! हुँ। अच्छा, उस पल्टन में कितनी औरतें हैं ?

पीरअली—लगभग एक हज़ार हुजूर।

रोज़—ओ हैल ! (हँसकर) Rubbish ! औरतें सिपाहगीरी करेंगी !! अच्छा हमारे साथ हमारे तम्बू में आओ। बाक़ी बात वहीं होगी लेकिन यहां किसी से भी कोई बातचीत मत करना और चुपचाप झांसी जाना। हमारा फ़ौजी क़ानून है। अच्छा।

पीरअली—हुजूर।

रोज़—और झांसी में जब हमलोग पहुंच जायें, तब हमको किसी तरह भीतर का सब हाल देते रहना। अच्छा।

पीरअली—हुजूर, इसका तो मैंने बीड़ा ही उठाया है।

रोज़—इनाम मिलेगा। किसी और सरदार को हमसे मिला सको तो मिलाना। अच्छा। झांसी में हमारी छावनी में बेखटके आने के लिये एक इशारा बतला दिया जायगा।

पीरअली—हुज़ूर। (वे सब जाते हैं)

(यवनिका)

लक्ष्मीबाई—(मुस्कराकर) अच्छा, जूही के साथ काशीबाई को भी भेज दो। एक और एक ग्यारह का बल रखते हैं।

(मोतीबाई जाती है)

लक्ष्मीबाई—तोपें दिन रात चलेंगी। पर एक ही गोलंदाज लगातार दिन रात काम नहीं कर सकता। एक पुरुष गोलन्दाज के साथ एक स्त्री गोलन्दाज का जुट रहना चाहिए। रसद खाना-पीना और गोला-बारूद देते रहने के लिये स्त्रियां काम करेंगी। दीवारों या बुर्जों के टूटने-तड़कने पर तुरन्त स्त्री और पुरुष कारीगर चूना, गारा, पत्थर इत्यादि लेकर पहुँचें। इसकी निरन्तर तैयारी रहे।

मुन्दर—दीवान जवाहरसिंह और लालाभाऊ ने यह सब लिख-पढ़ लिया है, मैं आज्ञा को फिर दुहराये देती हूँ।

लक्ष्मीबाई—क़िले के भीतर बारूद बनाई जाने लगी है न?

मुन्दर—हां सरकार। आज से इस काम का आरम्भ होगया है।

(मोतीबाई काशी और जूही को लाती है। वे दोनों वर्दी में हैं। आकर फ़ौजी प्रणाम करती हैं।)

लक्ष्मीबाई—तुम दोनों को कालपी जाना है। मोतीबाई से सुन लिया होगा?

काशी और जूही—(प्रसन्नता के साथ) हां सरकार।

लक्ष्मीबाई—(जूही के सिर पर हाथ फेर कर) तेरे नाम की महक और देश की मुक्ति का मिलन हो।

(जूही सिर झुका लेती है)

लक्ष्मीबाई—(काशी के सिर पर हाथ फेर कर) काशी, तू स्वराज्य का तीर्थ बने।

काशी और जूही—हर हर महादेव! (दोनों जाती हैं)

मोतीबाई—मैं इनके भेजने का प्रबंध कर दूं। (जाती है)

लक्ष्मीबाई—जो पठान आये हैं, वे घुड़सवारी भी जानते हैं? पता लगाया?

मुन्दर—जानते हैं सरकार। पर उनके पास घोड़े नहीं है।

लक्ष्मीबाई—घोड़े उनको अपने यहां से दे दिये जायेंगे। बहुत हैं। (नेपथ्य में स्त्री-कण्ठ से 'हर हर महादेव' की पुकार सुनाई पड़ती है। लक्ष्मीबाई मुस्कराकर उस दिशा में देखती हैं) यह अपनी स्त्री-सेना का स्वर है।

मुन्दर—(मुस्कराकर) हाँ सरकार लक्ष्मी सेना का।

मोतीबाई—इनमें से अधिकांश स्त्रियाँ जिनका बहुत सा समय साज-सिंगार और बातों के तूफान उठाने में जाता था किस आन-बान के साथ हथियार लगाये चली आरही है! इन सिंगार और झगड़े—सब—तलवार के म्यान में समा गये है!! अहा हा हा!!!

(राधारानी, सुन्दर झलकारी इत्यादि कुछ स्त्रियां फौजी अफसरों की वर्दी में आती हैं और रानी को प्रणाम करती हैं। लक्ष्मीबाई प्रति-नमस्कार करती हैं।)

लक्ष्मीबाई—तुमको देखकर मुझको बड़ा हर्ष होता है। तुम्हारे काम को देखकर में कृत-कृत्य हो जाऊँगी। बख्शिनजू, तुमको लालाभाऊ के साथ क़िले की पूर्वी बुर्ज के तोपखाने पर रहना है। अंग्रेज वहां से झाँसी पर गोलाबारी करेंगे। (हँसकर) तोप चलाते-चलाते तुम्हारे खरे गोरे गालों पर बारूद की कालोंच पुत-पुत जावेगी।

राधारानी—सरकार, वह मेरी रानी का दिया हुआ काजल होगा और सिंदूर भी। (सब हँसती हैं)

लक्ष्मीबाई—मोतीबाई गुलाम ग़ौसखाँ के जुट में रहेगी और क़िले की दक्षिणी बुर्ज के तोपखाने पर काम करेगी और झलकारी—

झलकारी—ऊँ—ऊँ—सरकार, मै तो अपने उनाव दरवाजे पै काम कर हों। क़िले में काम कर हों तो उनाव दरवाजौ सूनों न होजैय?

लक्ष्मीबाई—(हँसकर) अरी परमेसरी, तोसें कौन्हें कही कि तैं क़िले में होकें तोप चलाइये? तैं अपने पूरन के पास उनांव दरवाजे की बुर्ज पै रहिये और उतई अपनी बड़ी आंखन मे तोप के धुआँ को काजर लगा-

उत नदिये। मन जो भई मगन ? (झलकारी खिलखिला कर हँसती है)
मोरे मन में आउत कि तोरे गालन पै दो थापरें लगा देऊँ।

झलकारी—हौ थो। मो महाराज, लडुआ खाँड़ घुलावने पर हैं।
(हँसती है)

लक्ष्मीबाई—तै बैरियन को लोहू के लडुआ खुवाइहै, मैं तोरो मुँह घी-सक्कर के लडुअन से भर देऊँ।

झलकारी – (गम्भीर होकर) ऐसोई हुइये महाराज, ऐसोई हुइये।

लक्ष्मीबाई—और सुन्दर, तेरा जुट दीवान दूल्हाजू के साथ ओर्छा फाटक पर रहेगा। सैंयर फाटक पर गुदावख्श, खण्डेराव फाटक पर सागर सिंह, दतिया फाटक पर रामचन्द्र देशमुख, बड़गांव फाटक पर करन काछी और ठाकुर लोग, सागर खिड़की पर पीरअली। तू क़िले में आती-जाती बनी रहना। वैसे मैं स्वयं किले के भीतर और बाहर दोनों जगह काम करूँगी। प्रत्येक फाटक पर दौड़ लगाऊंगी। नगर की गली-गली में घूमूंगी और जनता को सचेत रक्खूंगी। अंग्रेजों के गोलों से नगर में आगें लगेंगी, उनके बुझाने का तुरन्त प्रबन्ध करूंगी किसी को खाने-पीने का कष्ट न हो पाय इसका प्रबन्ध करती रहूंगी। अब सब 'हर हर महादेव' कहकर शान्ति, धैर्य और संयम के साथ अपने-अपने काम पर चिपटकर लग जाओ।

सब—हर हर महादेव !!! (वे सब जाती हैं)

दूसरा दृश्य

स्थान–एक दिशा में झांसी का क़िला। पूर्व की ओर कमासिन टौरिया, बीच में ऊबड़-खाबड़ मैदान। इसी दिशा में, दक्षिण की ओर हटकर, जनरल रोज़ का शिविर है। ओट में है। दक्षिण की ओर असम मैदान, टौरियां और क़िले के निकट जीवनशाह की टौरियों का शिलसिला है। पश्चिम की ओर कुछ दूरी पर जार पहाड़ी है। उत्तर की ओर दक्षिण उत्तर की लम्बाई में अंजनी की टौरिया नाम की पहाड़ी है। दोनों ओर से गोलाबारी चल रही है। जनरल रोज़ ने

झांसी को चारों ओर से घेर लिया है। चारों ओर के मोर्चों पर समाचार भेजने के लिये रोज़ ने तार लगा रक्खे हैं। उसका सदर-मुकाम कमासिन टौरिया की बग़ल की एक टेक के पीछे है जहां से दूरबीन लगाकर वह क़िले और शहर के भीतर भागों को देख सकता है। स्टुअर्ट नामक उसका ब्रिगेडियर चन्देरी को विजय करके अपने दस्ते समेत उससे आ मिला है। लड़ाई ज़ोर के साथ जारी है। शहर में अङ्गरेज़ी गोलों और हवाइयों के कारण आगें लग-लग जाती हैं परन्तु रानी के अच्छे प्रबन्ध से वे बुझा दी जाती हैं। क़िले की दीवारें और बुर्जें अङ्गरेज़ी गोलों के कारण टूट जाती है, परन्तु झांसी की सेना के स्त्री-पुरुष कारीगर उनको जोड़-जोड़ लेते हैं। अङ्गरेज़ी पल्टनें बन्दूकों पर संगीनें चढ़ाये क़िले के फाटकों पर हमला करती है परन्तु झांसी की गोलियों की बौछार से हताहतों की हानि सहकर उनको लौट जाना पड़ता है। एक टेक के पीछे से रोज़, उसका ब्रिगेडियर स्टुअर्ट और एक और अङ्गरेज़ अफ़सर आते हैं। रोज़ के हाथ में दूरबीन है। समय-दिन।]

रोज़—(दूरबीन से देखकर) ओह! स्त्रियां तोप चला रही है! हैं मर्दानी वर्दी में, मगर पहिचानी जा सकती हैं। कुछ रसद बांट रही हैं। कुछ टूटी हुई दीवारों और बुर्जों के कंगूरों की मरम्मत में मदद दे रही है!! इतनी तरतीब से, इतनी तेज़ी से, हिन्दुस्थानियों को काम करते आज देखा!!! अचरज होता है। देखो स्टुअर्ट।

स्टुअर्ट—(दूरबीन लेकर और देखता हुआ) जनरल, पेड़ों की छाया में कुछ स्त्री-पुरुष काम कर रहे हैं। हमारा एक गोला उनके बीच में पड़ा!……धूल फिकी!!……फिर भी वे सब वहीं के वहीं!!!

(रोज़ भी दूरबीन लेकर देखता है)

रोज़—हाँ।

स्टुअर्ट—ये सब नेपोलियन हो गये क्या?

रोज़—महारानी नेपोलियन नहीं, जोन आव आर्क है।

स्टुअर्ट—उसको जिन्दा पकड़ सकें तो कमाल होगा।

(नेपथ्य में तार की घण्टी बजती है)

रोज़—देखो स्टुअर्ट, किस मोर्चे से खबर आई है। मैं तब तक दूरबीन लगाये हूँ।

(स्टुअर्ट जाता है। रोज़ भिन्न भिन्न कोणों से झांसी का निरीक्षण करता है। थोड़ी देर बाद स्टुअर्ट आता है।)

स्टुअर्ट—खबर आई है कि अपना पश्चिमी मोर्चा नबका सब तहस-नहस हो गया है। किले का दक्षिणी तोपखाना भी बहुत ऊधम कर रहा है।

रोज़—अपने ब्रिगेड के दक्षिणी हिस्से को आदेश भेजो कि बहुत जोर के साथ किले के दक्षिणी भाग पर गोलाबारी करें। पीरअली कई दिन से नहीं आया है। आज अगर आवे तो उससे कुछ काम की बातें पूछनी हैं।

स्टुअर्ट—हां जनरल, है तो वह भरोसे का आदमी। मैं जाता हूँ। दक्षिणी मोर्चे को खबर देता हूँ।

रोज़—और मैं पश्चिमी मोर्चे का हाल देखने जाता हूँ। यह मेरे साथ चलेंगे। (वे सब जाते हैं)

तीसरा दृश्य

[स्थान—झांसी के क़िले का एक भीतरी भाग। बुर्जों पर तोपें चढ़ी हुई हैं। दक्षिणी बुर्ज पर, आड़ लिये हुये गुलामगौस गोलन्दाज़ तोपों को संभाल रहा है। उसके साथ एक गोलन्दाज और है। समय-दिन]

गुलामगौस—पंडित जी, रानी साहब की स्त्री-गोलन्दाज चपल बहुत हैं मुझको ठंडे आदमी चाहियें जो काम करने के समय गाते न हों।

दूसरा—कभी कभी आल्हा गाते गाते तो मैं भी काम करता हूं।

(दूसरी ओर से गोलाबारी होती है। वे दोनों थोड़ी देर चुप रहते हैं।)

गुलामगौस—अंग्रेजों का यह तोपखाना तो बहुत परेशान कर रहा है। हूं। पंडित जी, मिलकर एक बार वह गीत तो गालो फिर देखता हूं, इस तोपखाने को। वही 'जननी जन्म दियो है तोखों बस आजहि के लाने।

(दोनों गाते जाते हैं और तोपों के मुहरों को संभालते जाते हैं। संभाल लेने पर वे दोनों तोपों पर पलीते छुलाते हैं। तोपों में धुंआ न छोड़ने वाली बारूद है। इसलिये अंग्रेजों के तोपखाने का विनाश दिखलाई पड़ जाता है। वे दोनों खुशी के मारे उछल पड़ते हैं।)

दोनों—वह मारा है!

(लक्ष्मीबाई आती हैं। वे दोनों उनको फौजी प्रणाम करते हैं)

लक्ष्मीबाई—गुलामगौस, आज अंग्रेजो ने पश्चिम की ओर, जार पहाड़ी के पास, एक नया मोर्चा बनाया है। वह विपद बरसा रहा है। उसको मिटाना ही होगा।

गुलामगौस—सरकार इस तोपखाने का बन्दोबस्त कर दें, मैं पश्चिमी तोपखाने को देखता हूं।

लक्ष्मीबाई—मैं मोतीबाई को भेजती हूँ।

गुलामगौस—वे कमाल की गोलन्दाज़ हैं, मगर इस तोपखाने को न संभाल पावेंगी। किसी और को भेजें सरकार। अंग्रेज लोग यही से किले में घुसना चाहते है, क्योंकि यही उनके जीवनशाह वाले तोपखाने के अत्यन्त निकट बैठता है।

लक्ष्मीबाई—राधारानी बख्शिन को भेज दूं?

गुलामगौस—हां सरकार भेज दीजिये। वे बड़े खानदान की हैं।

लक्ष्मीबाई—लड़ाई और आत्मत्याग में भी ऊँच-नीच? भगवान, इस देश की रक्षा करो। अच्छा, राधारानी को भेजती हूं।

(लक्ष्मीबाई जाती हैं। गुलामगौस तोपों को भरता है। थोड़ी देर में राधारानी आ जाती है। उसके साथ एक स्त्री गोलन्दाज़ और है। राधारानी तोपखाने को संभाल लेती है। गुलामगौस अपने साथी सहित चला जाता है। गोलाबारी फिर होने लगती है। राधारानी

पीरअली—रानी साहब की वह सहेली उसी जगह से तोप चला रही है आज। सुन्दरबाई उसका नाम है।

दूल्हाजू—आपने हुकुम दिया है मैं वैसा ही करूँगा।

रोज़—हमारे साथ दगा फरेब या बेईमानी करोगे तो सबसे पहले तुमको फांसी पर टांगा जावेगा। समझ गये?

दूल्हाजू—हुजूर।

रोज़—सैंयर फाटक पर कौन है पीरअली?

पीरअली—खुदाबख्श।

रोज़—कुल कितने गोलन्दाज हैं अब?

पीरअली—बेशुमार हैं। गुलामगौस और मोतीबाई मुसलमानों मे खास हैं। हिन्दुओं की एक बडी अफसर राधारानी मारी गई। उसका पति लालाभाऊ नामी गोलन्दाज़ है। रघुनाथसिह वगैरह और भी बहुत से हैं। राहतगढ से भागे हुए पठान किले में होकर लड़ रहे हैं, यह आपको मालूम ही है।

रोज़—हूँ—ऊँ—यह मोतीबाई कौन है?

पीरअली—एक नाचने-गाने वाली औरत। रानी साहब के जासूसी मुहकमे की सरदार।

रोज़—डैन्सिग गर्ल ए गनर! व्हाट इल्स हैव आई टु हियर इन दिस डैम्ड एकर्सेड प्लेस!! *मगर जासूसी मुहकमे का अफसर तो एक मोतीसाईं सुना गया था?

पीरअली—नहीं हुजूर, वह अफसर यही नाचने वाली है उसका नाम मोतीबाई है। मोतीसाईं नाम का वहा कोई नही है।

(दोनों अङ्गरेज़ हँस पड़ते हैं)

रोज़—स्टुअर्ट हम लोग बेवकूफ बन गये। अच्छा, पीरअली, और कोई बात?

---

* नाचने वाली गोलन्दाज! इस सत्यानासी पलीत जगह में मुझको अब और क्या सुनना बाकी रह गया?

पीरअली—हां हुजूर, कालपी से रावसाहब और तात्या टोपे झांसी की मदद के लिये फ़ौज लेकर आ रहे हैं।

रोज़—(स्टुअर्ट की ओर दृष्टिपात करके) अच्छा, अच्छा। हमारा काफ़ी इन्तिजाम है। कोई बात नहीं। और कुछ ?

पीरअली—हुजूर क़िले में बारूद बहुत है। इस पर भी और बनाई जा रही है। क़िले में जो इमली के पेड़ हैं उनके नीचे सुखाई जाती है।

रोज़—अच्छा ! ओह !! हूँ।

पीरअली—और हुजूर क़िले के पश्चिमी हिस्से में ही एक कुआं है और कहीं पानी नहीं।

रोज़—ओ ! ओ !! ओ !!! अच्छा अब तुम लोग जाओ।

(वे लोग जाते हैं। उनके उपरान्त रोज़ और स्टुअर्ट भी अपने डेरे पर चले जाते हैं)

पाँचवाँ दृश्य

[स्थान—झांसी के क़िले का एक भीतरी भाग। समय—सन्ध्या-दोनों ओर से तोपें चलते-चलते धीमी पड़ गई हैं। लक्ष्मीबाई, मुन्दर, मोतीबाई, जवाहरसिंह, रघुनाथसिंह, रामचन्द्र देशमुख और थोड़े से और लोग आते हैं।]

लक्ष्मीबाई—तुम सब मेरे रण-बांकुरे हो। तुम सबको रण-कंकण बांधूंगी।

जवाहरसिंह—(हँसकर) उसके गौरव के लिये, सरकार, हमारी कलाही, मारने के लिये खड्ग और मरने के लिये सिर फड़फड़ा रहे हैं।

लक्ष्मीबाई—(मुस्कराकर) जियोगे अमर रहोगे, सेनापति। ला मुन्दर।

(मुन्दर अपने झोले में से रण-कंकण निकालकर देती है। लक्ष्मीबाई सब की कलाहियों पर बांध देती हैं। भाऊ बख्शी आता है। हाथ में दूरबीन लिये है।)

भाऊ—सरकार, कालपी की सेना लौटकर चली गई है। वह अंग्रेजों से हार गई।

लक्ष्मीबाई—मैंने जवाहरसिंह से सुन लिया है और दूरबीन से अपनी आंखों देख लिया है। पर इससे क्या हम लोगों को घबरा जाना चाहिये? 'हारिये न हिम्मत बिसारिये न राम नाम' अपना बीज-मन्त्र है। तात्या असाधारण सेनापति है और राव साहब पेशवा के हाथ में असंख्य सेना और सामान है। आओ बख्शी तुमको भी रण-कंकण बांधूं।

भाऊ—(मुस्कराकर) असल में आया तो मैं इसी के लिये था, सरकार। (कलाई बढ़ाता है)

लक्ष्मीबाई—(कंकण बांधते हुये) एक ही त्याग, एक ही मरण, एक ही जन्म से स्वराज्य सिद्ध नही होता। कर्त्तव्य पालन करते हुये मरना जीवन का दूसरा नाम है। यह रण-ककण जीवन और मृत्यु की मैत्री का प्रतीक है, उत्साह और दूरदर्शिता का समन्वय, शक्ति और संयम का सामञ्जस्य, त्याग और कौशल की रसायन, शौर्य और विवेक का वाहन तपस्या और शील का पाणिग्रहण।

भाऊ—(हँसकर—उसकी हँसी थके हुये योधा की हँसी है।) सरकार मैंने क़फ़न सिर से बाध लिया है। रङ्ग उसका केसरिया इसलिये है कि सरकार का झण्डा इसी रङ्ग का है।

लक्ष्मीबाई—(मुस्कराकर) मैं जो यह सब कह गई सो तुम इस प्रकार समझे! (सस्नेह जरा सा झिड़कती हुई) मरने के लिये भी थोड़े से विवेक से काम लेना चाहिए। बख्शिन कितने धीरज वाली थी!

(भाऊ का चेहरा गिर जाता है। वह सिर लटका लेता है।)

लक्ष्मीबाई—(मीठे स्वर में) मैं तुम्हारे लिये, तुम सबके लिये अपने हाथ से कलेवा रांधूगी। पेट भरके खाना। खाओगे न? और जी भर के लडना—बुद्धि के साथ।

सब—अवश्य, सरकार, अवश्य।

(मोतीबाई उचटकर एक ऊँचे स्थान पर जाती है और कुछ देखकर लौटती है।

मोतीबाई—सरकार, ओर्छा फाटक की तोप ढीली पड़ गई है। बाहर की उस टेक पर एक लाल झण्डा उठा है। यहां से थोड़ी सी झाँई पड़ रही है उस ऊँचे स्थान से उसका गहरा रङ्ग साफ़ दिखता है।

(भाऊ रानी के हाथ में दूरबीन देता है। वे मोतीबाई द्वारा बतलाए हुए ऊँचे स्थान से देखती हैं। फिर नीचे आ जाती हैं।)

लक्ष्मीबाई—ओर्छा फाटक के बाहर वाली टेक पर वास्तव में लाल झण्डा खड़ा किया गया है। यह रङ्ग और झण्डा अंग्रेजों का नहीं है। यह किसी छल, किसी द्रोह, किसी घात का संकेत है।

मोतीबाई—(घबराकर) सरकार; मालूम होता है दूल्हाजू ने स्वामिघात किया है। वहां सुन्दर अकेली पड़ गई है। मुझको उसकी कुमुक पर जाने की आज्ञा दीजिए।

लक्ष्मीबाई—जाओ मोती। धीरज से काम लेना।

(मोतीबाई जाती है)

जवाहरसिंह—मैंने पीरअली की शिकायत सुनी थी जो सरकार को सुना दी थी, परन्तु जाच पड़ताल का अवसर ही नहीं मिला।

लक्ष्मीबाई—धोखा हो गया! अस्तु, अब जो कुछ सामने है उसको देखो। देशमुख तुम मोतीबाई के पीछे पीछे जाओ। वह अकेली गई है। (देशमुख जाता है) तुम मेरे साथ आओ, भाऊ।

(वे दोनों जाते हैं)

छटवाँ दृश्य

[स्थान झांसी किले के परकोटे पर ओर्छा फाटक। ओर्छा फाटक की दाईं ओर एक टेक पर बुर्ज़। फाटक बन्द है। गोलाबारी हो रही है; परन्तु अंग्रेज़ी तोपखाने का मुंह ओर्छा फाटक पर नहीं है और न ओरछा फाटक से अंग्रेजो पर गोलाबारी हो रही है।

दूल्हाजू लोहे की लम्बी छड़ लेकर फाटक पर धीरे धीरे आता है। फाटक पर ताले पड़े हुये हैं। वह उनकी सांकलों को छड़ से तोड़ता है। इस प्रकार जब सब सांकलें टूट जाती हैं तब सुन्दर आती है। वह हाथ में नंगी तलवार लिये है। अभी दिन होने में काफी देर है। सुन्दर को देखकर दूल्हाजू सहम जाता है।)

सुन्दर—(कड़ककर) नरक के कीड़े ! देशद्रोही !! तू अंग्रेजों से कुछ नहीं पायेगा !!!

(तलवार का वार करती है। दूल्हाजू छड़ पर उस वार को झेल लेता है। तलवार बीच में से टूट जाती है। तलवार का जो टुकड़ा सुन्दर की मुट्ठी में रह जाता है, उसी से दूल्हाजू पर वार पर वार करती है। दूल्हाजू बचाव करता है। दूल्हाजू उसकी छाती पर छड़ अड़ा देता है। फाटक के बाहर (नेपथ्य में) अंग्रेज़ हुर्रा घोष करते हैं। सुन्दर फिर वार करती है। दूल्हाजू के हाथ की छड़ सुन्दर के पेट में अड़ जाती है। अंग्रेज़ी सेना फाटक को खोलकर घुस आती है। सुन्दर के मुँह से 'हर हर महादेव' निकलता है। एक गोरा उस पर पिस्तौल चलाता है। वह गिर जाती है। दूल्हाजू छड़ को पृथ्वी पर टेककर खड़ा हो जाता है। कुछ गोरे दूल्हाजू पर संगीन लगी बन्दूकें सीधी कर लेते हैं। उसी समय ब्रिगेडियर स्टुअर्ट, जो गोरे सिपाहियों की एक ओर है, रोकता है।)

स्टुअर्ट—अपना आदमी है !

(गोरे बन्दूकें ऊपर उठा लेते हैं)

स्टुअर्ट—(नीचे पड़ी हुई सुन्दर को इंगित करके) यह रानी है ? रानी लक्ष्मीबाई ?

दूल्हाजू—नहीं साहब, महज़ नौकरानी !

स्टुअर्ट—(उपेक्षा की दृष्टि से दूलहाजू की ओर देखकर) लेकिन सिपाही है। इसको सिपाही का सत्कार दिया जायगा। (अपने साथियों

से) यह अपनी मूठ में अब भी तलवार लिये हुये है। वर्दी में। इसको पीछे ले जाकर कहीं गाड़ दो। जल्दी करो! इज़्ज़त के साथ!!

(कुछ गोरे उसको उठा ले जाते हैं)

स्टुअर्ट—अब एकदम शहर पर धावा बोलो। हथियारबन्द औरतों को छोड़कर और किसी औरत पर वार मत करना। बाक़ी लोगों का विजन* करो। रानी क़िले से निकल कर हमला करे तो मकानों की आड़ें ओटें लेकर बढ़ना। आगे वह रहा रानी का महल। उस पर फ़ौरन कब्ज़ा करो। बढ़ो।

(गोरे सैनिक नगर में घुस पडते हैं और फ़ैल जाते हैं। नेपथ्य में मोतीबाई कहती है—'सैंयर दरवाजे कुंवर खुदाबख़्श मारे गये!' नेपथ्य में रामचन्द्र देशमुख कहता है—'मैं उनको क़िले में लिये चलता हूँ। क़िले भीतर हो जाओ।' इसके बाद नेपथ्य में विजन का कोलाहल होता है। गोरी सेना नगर में फैलती जाती है। आगें लगाई जा रही हैं। स्टुअर्ट अपने दल सहित एक ओर जाता है दूसरी ओर से लक्ष्मीबाई सदल आती हैं। नाना भोपटकर साथ है। गोरी सेना से लक्ष्मीबाई के दल की लड़ाई होती है। गोरी सेना हटा दी जाती है।)

भोपटकर—(आगे बढ़कर) पहले इस बूढ़े ब्राह्मण का वध करिये तब आप गोली खाइये।

लक्ष्मीबाई—नाना साहब, यह क्या?

भोपटकर—समझदार होकर भी आप देखती नहीं हैं, गोरे मकानों की आड़ से गोली चला रहे हैं? आप पर एक गोली पड़ी कि समग्र झांसी रसातल को गई। अभी अपने हाथ में क़िला है। लड़ाई जारी रक्खी जा सकती है। लौटिये, लौटिये या मेरा वध करिये।

लक्ष्मीबाई—(एक क्षण सोचकर) हूँ।

---

* आज भी बुन्देलखण्ड में 'कतल आम' को विजन कहते हैं।

(पठानों का सरदार गुलमुहम्मद आगे आता है, वह अधेड़ अवस्था का पुष्ट देह मनुष्य है)

गुलमुहम्मद—सरकार बुड्ढा ठीक बोलता है। अन्दर चलें। सरकार जिद नहीं करें।

लक्ष्मीबाई—अच्छा। (तलवार ऊँची उठाकर) सब लोग किले के भीतर हो जाओ।

(वे सब चले जाते हैं। उसके उपरान्त अंग्रेज़ी सेना नगर के चौराहों और गलियों में घुस पड़ती है। घुसती हुई चली जाती है। नेपथ्य में हुरी घोष होता है। और, आग की लपटें दिखलाई पड़ती हैं। कोलाहल बढ़ता है।)

सातवां दृश्य

(स्थान—झांसी के किले का भीतरी भाग। सन्ध्या हो रही है। रानी और मुन्दर आती हैं। दोनों सैनिक वेश में।)

लक्ष्मीबाई—(दूरबीन से आग की लपटों को देखकर) मुन्दर, महल आधा जल चुका है—कोई बात नहीं। पर यह पुस्तकालय ! हा, हमारा पुस्तकालय !! वेद, शास्त्र, पुराण भस्म किये जारहे हैं !!! काव्य और नाटक फूके जारहे है !!!! हा कालिकास, कालिदास को राख किया जा रहा है !!!!! मुन्दर, मुन्दर।

(लक्ष्मीबाई मूर्छित होने को होती हैं। मुन्दर थाम लेती है। नेपथ्य में आग की लपटें और भी बढ़ती है और जनता के चीत्कार सुनाई पड़ते हैं।

लक्ष्मीबाई—(मुन्दर की थाम से खिसक कर, भर-भराकर बैठते हुए—मुन्दर बैठकर उनकी पीठ को सहारा देती है) मुन्दर, मुन्दर, मेरी प्यारी झांसी की यह कुगति ! यह दुर्गति !! मेरे जीतेजी !!! मेरी आँखों के समाने !!!!

(लक्ष्मीबाई का गला फट जाता है और बिलख-बिलख कर रोती है। रामचन्द्र देशमुख आता है)

सुन्दर—(रोते हुए) कुंवर साहब, यह हमारी शान, यह हम लोगों की दुर्गा रो रही है ! मैं क्या करूँ ? अब क्या होगा ?

रामचन्द्र—(रुँधे गले से) बाई साहब ! सरकार !! संभलिए, सोचिए । कुंवर गुलाम गौस खां दुश्मन की गोली से मारे गए ।

(लक्ष्मीबाई उछल कर खड़ी हो जाती हैं । आंसुओं को पोंछती हैं और गला साफ करती हैं ।)

लक्ष्मीबाइ—भाऊ को उनकी जगह भेजो और लाश को महल के पास ।

रामचन्द्र—(नीचा सिर करके) सेनापति खुदाबख्श भी मारे गए हैं । उनकी लाश उठा लाया हूँ ।

लक्ष्मीबाई—वहीं महल के पास दोनों दफनाए जांयगे । जाओ ।

(रामचन्द्र देशमुख जाता है । मोतीबाई आती है । वह उदास है)

मोतीबाई—कुंअर गुलाम ग़ौस खां भी मारे गए !

लक्ष्मीबाई—हां मोती । एक दिन सबको मरना है । परन्तु वीर की मौत विरलों को ही मिलती है । दक्षिणी तोपखाना चुप पड़ गया है । जा मेरी मोती, उसको जगा तो दे ।

मोतीबाई—अभी लीजिये सरकार ।

(मोतीबाई जाती है । नेपथ्य में तोपो के चलने की आवाज होती है । फिर बन्दूक चलने की । मोतीबाई कहती है - 'मरी मैं')

(मुन्दर दौड़ कर जाती है और एक सैनिक की सहायता से घायल मोतीबाई को उठा लाती है । लक्ष्मीबाई उसको गोद में लिटा लेती हैं)

लक्ष्मीबाई—(सैनिक से) तुम सब सरदारों को लिवा लाओ ।

(सैनिक जाता है)

मुन्दर —(काँपते गले से) यह भी चली सरकार क्या ?

मोतीबाई—(टूटे हुए स्वर में) इस गोदी में सिर रक्खे हुए मरना कि····त · नों···के····भा····ग्य····में····

लक्ष्मीबाई—आत्मा अमर है, शरीर का चाहे जो कुछ हो।

मोतीबाई—रा ... नी ... उ ... गा ... ना ...

(मोतीबाई का प्राणान्त होता है। लक्ष्मीबाई उसके शव को आंखें झुकाकर नीचा सिर करके टहलने लगती हैं।)

लक्ष्मीबाई—मुन्दर, इसके शरीर को भी महल के पास लिवाजा। यह भी वहीं जलाई जायेगी।

(मुन्दर जाती है और एक सैनिक को लाकर उसकी सहायता से मोतीबाई के शव को उठवा ले जाती है। लक्ष्मीबाई टहलती रहती हैं। कुछ क्षण के उपरान्त मुन्दर आ जाती है)

लक्ष्मीबाई—एक के बाद दूसरा, सब चले जा रहे है। हूं! मुन्दर यह कालिदास के नाटक में शकुन्तला का अभिनय किया करती थी! (नेपथ्य की ओर देखकर और जलती हुई लपटों पर आंख को गड़ाकर) ओह! अब नाटकशाला भी जल रही है!! इसी में ग्वालियर की नाटक मण्डली ने हरिश्चन्द्र के सत्य की परीक्षा का खेल दिखलाया था। वह भी भस्म हो रही है!!! (मूर्छित होने को होती हैं, परन्तु अपने को संभाल लेती हैं उसी समय नाना भोपटकर, जवाहरसिंह, रघुनाथसिंह, भाऊ रामचन्द्र और गुलमुहम्मद आ जाते हैं।)

लक्ष्मीबाई—पुष्पों के भस्मीभूत होने के उपरान्त वाटिका को उद्यान नही कहा जा सकता, तान के बिगड़ जाने पर राग का लोप हो जाता है, सौरभ की समाप्ति पर समीर जैसे कोरा पवन, दया के तिरोहित होने पर पुरुषार्थ जैसे केवल एक कर्कश भाव और मृदुलता के अन्त पर नारी जैसे एक विभीषिका मात्र रह जाती है, वैसे ही झांसी की जनता के विजन और वेदशास्त्र, कालिदास, बाण, भवभूति इत्यादि के राख में मिल जाने के पीछे अब झासी में बचा ही क्या है? बतलाओ क्या बचा है?

जवाहरसिंह—श्रीमन्त, झासी का जब तक नाम है आपका दिया हुआ रण-कंकण उस पर बलिदानो और त्यागों की वर्षा करवाता रहेगा।

लक्ष्मीबाई—(निश्वास छोड़कर) आज तक आप लोगों ने अप्रतिम वीरता से झांसी की रक्षा की। प्राणों की होड़ लगा दी। परन्तु अब चिन्ह अच्छे नहीं देख पड़ते हैं। सुन्दर, मोतीबाई, राधारानी सब चली गईं। काशी और जूही भी कदाचित् वीरगति पा गई हों। सागरसिंह, खुदाबख्श इत्यादि सब स्वर्गवासी हो गये। किले की चार सहस्त्र सेना में से उतने सौ भी नहीं बचे हैं। अंग्रेजों ने किला घेर लिया है। वे एकाध दिन में भीतर घुस आवेंगे।

जवाहरसिंह और भाऊ—नहीं आ पावेंगे सरकार।

लक्ष्मीबाई—(अनसुनी करके) आप लोगों में से जो लड़ते-लड़ते बचेंगे उनको फांसी होगी। मैं पकड़ी तो नहीं जा सकती परन्तु फिरंगी मेरे शव का स्पर्श करेंगे। मेरे पुरखों का अपमान होगा। अब शिवराम भाऊ की बहू के लिये एक साधन बचा है। बारूद के कोठे में सैकड़ों मन बारूद है। मैं वहीं जाती हूँ। पिस्तौल का एक धड़ाका होगा और अपने पुरखों में मिल जाऊँगी। आप लोग गुप्तमार्ग से बाहर हो जायें।

भाऊ—(भर्राये हुये कंठ से) मैं भी उसी बारूद के सहारे सरकार की सेवा के लिये यात्रा करूँगा। मेरा अब कौन बचा है?

भोपटकर—(जरा सा आगे आकर) आप आत्मघात करने जा रही हैं! यही न? कृष्ण की पूरी गीता जिसको कण्ठाग्र याद है और जो गीता के अठारहवें अध्याय को अपने जीवन में वर्तती चली आई है और जो प्रत्येक परिस्थिति में स्वराज्य स्थापना का, यज्ञ की वेदी पर, प्रण कर चुकी है, वह आत्मघात करेगी!!! करिये कृष्ण का अपमान। करिये गीता का अनादर। आप रानी हैं! आपकी आज्ञा का पालन तो करना ही पड़ेगा परन्तु आपके उपरान्त देश की जनता क्या कहेगी—जिसकी रक्षा के लिये आपने बीड़ा उठाया है?

गुलमुहम्मद—सरकार, अमारा आधे से ज्यादा पठान मारा गया। अम लोग आपका सोराज वास्ते सब कट मरेगा।

भोपटकर—(सुन्दर से धीरे से) दामोदरराव को लिवा लाओ।

लक्ष्मीबाई— अब एक बार और, हर हर महादेव ।

(सब हर हर महादेव कहते हुये जाते हैं)

आठवाँ दृश्य

[स्थान—झाँसी की एक गली । गली के दोनों ओर मकान । समय-रात्रि—पौ फटने में थोड़ा सा विलम्ब है । थोड़ी दूरी पर आग लग रही है । पूरन आता है ।]

पूरन— अरी, कहां रह गई ? क्यों मुझको हैरान कर रही है ?

(झलकारी का प्रवेश)

झलकारी—काहे को बिरथा हल्ला कर रये ? आतो गओ है घर, चलो घर में ।

पूरन— अरी, घर में मर जा । सवेरा होते ही फिर विजन होगा । कतर डालेंगे अंग्रेज ।

झलकारी— तुम दुक जाओ । मैं तो अपने घर में जात हों । जाओ ।

पूरन—ऐसी हठिन है, ऐसी हठिन कि जिसकी हद नहीं । आ, चली आ, मैं कहता हूँ, क्यों सेंत में प्राण गवांती है ।

झलकारी—कैदई कि नई आहो । जाओ जितै तुम्हारे सींग समाएं

(झलकारी एक ओर चली जाती हैं)

पूरन—भगवान, नारी है या आंधी । देख, मान जा ।

(एक पड़ोसी आता है)

पड़ोसी—क्या है पूरन ?

पूरन—भैया, अभी थोड़ी देर पहले की लडाई मे रानी साहब का मार्ग सुगम करने के लिये लालाभाऊ बख्शी के साथ-साथ बहुत कोरी मारे गए । भोर होते ही गोरे बाकी कोरियों का विजन करेंगे । उससे कहा कि चल किसी खोक में छिप जावें अभी से, क्योकि पीली पौ फटने ही वाली है परन्तु वह घर नहीं छोड़ रही है । गोरे इसके भाई बन्द है, जो छोड़ देंगे ?

पड़ोसी—आ जाय तो बुला देखो। नहीं तो, मैं भी तुम्हारे साथ कहीं छिपने को चलता हूँ। रानी तो निकल गईं न ?

पूरन—निकल गईं। भांडेरी फाटक से गईं। मैंने खुद देखा। पर गोरे उनका पीछा करेंगे। अब हम लोग लाचार हैं। क्या करें, कुछ नहीं कर सकते। भगवान उनकी रखवाली करें। अरी, आती है या नहीं ?

(उत्तर के लिये प्रतीक्षा करता है पर झलकारी कोई उत्तर नहीं देती। नेपथ्य में शोर होता है। वे दोनों सहम जाते हैं।)

पड़ोसी—चलो पूरन भाग चलें। झलकारी का कुछ नहीं बिगड़ेगा। अंग्रेज जन्डेल ने स्त्रियों के न मारने का हुक्म निकाला है, बिजन लड़कों और आदमियों का होना है। चलो। पो फट रही है। देखो।

(वे दोनों चले जाते हैं दूसरी दिशा से कुछ गोरे सिपाही आते हैं)

एक—यहां अभी कुछ लोग बातें कर रहे थे।

दूसरा—चलो, उस तरफ़ देखें।

(वे सब जाते हैं)

[एक ओर से झलकारी आती है। उसने रानी लक्ष्मीबाई जैसी वेशभूषा की है। दूसरी ओर से कुछ गोरे सिपाही प्रवेश करते हैं। पीली पौ फट रही है ॥

गोरे सिपाही—कौन ?

झलकारी—रानी लक्ष्मीबाई।

गोरे सिपाही—एं !

(वे उसको घेर लेते हैं)

झलकारी—नईं तो और कौन ? हम तुम्हारे जन्डेल के पास जाउन चाहता है।

एक सिपाही—रानी ! झांसी की रानी !!

झलकारी—हां हां नईं तो और को ? चल, लिवाचल अपने जंडल लों।

पांचवां अंक

पहला दृश्य

(स्थान —कालपी की एक शानदार इमारत की खुली हुई जगह । रावसहाब, जो अब ढीला-ढाला जवान है, बांदा का नवाब, इत्यादि सरदार बैठे हैं । सब ने भङ्ग पी है । नशे का सरूर चढ़ रहा है समय रात्रि ।)

एक सरदार—गरमी तो इतनी कसके पड़ रही है कि ओफ !

दूसरा—भङ्ग ने गरमी से बाजी लगाई है ।

रावसहाब—तभी तो जीतेंगे । यह कोंच नही है, कालपी है । यहां अंग्रेजों का बंटाढार कर देंगे । इधर लखनऊ की ओर नाना साहब और नवाब साहब दुश्मनों का होश ठिकाने लगा ही रहे होंगे ।

बांदा का नवाब—(यह उतरती अवस्था का, मझोला मोटा आदमी है; चढ़ते हुए सरूर में वहक कर) अबकी बार दुश्मन पर यहां हम लोग ऐसी दुलती कसेंगे कि उसके फिरसते याद करें । अपने पास बहुत साज-सामान है यहां रावसहाब ! साज-सामन !!

रावसहाब—साज़ की खूब याद दिलाई, या- मेरे । कुछ थोड़े से नाच-गान की भी फिकिर की जाय, न

कही । है न ? सच कहि-

बांदा का नवा-

आराम दीजिए थके

रावसाहब— आराम ही आराम है। उनको काफी भंग, शक्कर और बादाम भेज दी है।

एक सरदार—भगवान आपका भला करें। अब आवे जनरल रोज, रण में उसके पुरखे न हिल पड़ें तो मूंछ मुडा दूंगा।

दूसरा सरदार—दाढ़ी समेत ? या अकेली मूंछ ?

रावसाहब—दाढ़ी बाप के लिये रक्खे रहेंगे। ह ! ह !! ह !!! ह, ह, ह !!!!

बांदा का नवाब—तो फ़िर किसी नाचनेवाली को बुलाया जाय न?

रावसाहब—तात्या होता तो वह जल्दी कुछ बन्दोबस्त कर देता।

एक सरदार —वह तो अपने बाप के पास जालीन चला गया है। बाप मर गया हो तो जल्दी लौट आवेगा।

बांदा का नवाब—वह जो झांसी की रानी साहब के पास जूही नाम की हसीन छोकरी है उसी को न बुलवा लिया जाय ? सुना है वह बहुत अच्छा गाती-नाचती थी।

राव साहब—भिड़ के छत्ते में हाथ मत डालो, नवाब साहब।

बांदा का नवाब—तब फिर ?

(पहरे वाला आता है)

सरकार—झांसी की रानी साहब आई हैं। दर्शन करना चाहती है !

(झांसी की रानी का नाम सुनकर सब सिटपिटा जाते हैं।)

रावसाहब और अन्य कई सरदार—रानी साहब !!!

रावसाहब—(अनमनेपन के साथ) अच्छा, उनको ले आओ।

(पहरेदार जाता है)

रावसाहब—सब लोग संभल कर अदब कायदे के साथ बैठ जाओ विकट है। कैसे बुरे समय पर आ रही है ! जबान पर काबू रखना।

(पहरेदार लक्ष्मीबाई को पहुंचा कर चला जाता है। वे स्त्री वेश में हैं परन्तु सशस्त्र हैं। उनके आते ही सब खड़े हो जाते हैं

और उनको नमस्कार करते हैं। लक्ष्मीबाई प्रति-नमस्कार करती है। उनको अच्छे स्थान पर आदर के साथ बिठलाया जाता है। उन लोगों के लड़खड़ाने से हाथ-पावों को लक्ष्य करके वे समझ जाती हैं कि नशे में हैं।)

लक्ष्मीबाई—आप लोगों ने सोचा, आगे युद्ध का संचालन किस प्रकार किया जाय ?

रावसाहब—(लड़खड़ाते हुये स्वर में) हां, वही सब तो सोचा-विचारा जा रहा था। आपने बड़ी कृपा की जो ऐसे समय पर आई।

लक्ष्मीबाई—मैंने बड़ी भूल की जो बिना बूझे-बताये चली आई। फ़ौज में अनुशासन और व्यवस्था की कमी के कारण आप लोग कोंच की लड़ाई हार गए। नहीं तो रोज की क्या मजाल थी जो इतने आदमी और सामान के होते हुए विजय पा लेता ?

रावसाहब—सब ठीक हो जायगा, बाई साहब, सब ठीक हो जायगा। आदमियों को थोड़ा सा आराम भी तो चाहिये।

लक्ष्मीबाई—आराम ! हूं !! हमारे सैनिक शूरवीरी और पराक्रम में अंग्रेजों से बढ़े-चढ़े हैं परन्तु दूरदर्शी योजना की कमी के कारण उनका शौर्य विफल हो-हो जाता है। जब तक आप अपनी सेना का अच्छा प्रबन्ध नहीं करेंगे विजय दूर रहेगी।

एक राजा—जय और पराजय भगवान के हाथ में है, रानी साहब।

लक्ष्मीबाई—भगवान ने यह कहां कहा है कि सेना का किसी एक को मुख्य अधिकारी न बनाओ और मनमानी करते रहो ?

(वे एक दूसरे का मुंह ताकने लगते हैं)

रावसाहब—आपने हमारी सेना को कोंच की लड़ाई में बचा निकाला था। आपकी योजना को हम लोग मानेंगे।

कुछ सरदार—(बिलकुल लड़खड़ाये हुये स्वर में) हां हां जरूर।

लक्ष्मीबाई—(इस खुशामद से रुष्ट होकर) रावसाहब आपके पुरखों का एक ऋण मेरे ऊपर है। (कमर से तलवार खोलकर और रावसाहब

के सामने मूठ की तरफ से रखकर) यह तलवार आपके पूर्वजों की दी हुई है। भगवान की दया से मेरे पूर्वजों ने और मैंने इसका उचित उपयोग किया। अब वह आपके आदर से वंचित हो गई है। लौटाती हूं।

(सरदारों का नशा उतरासा जाता है)

रावसाहब—(फटे हुए स्वर में, खड़े होकर) आपके पुरखों ने और आपने स्वराज्य की स्थापना के लिये जो कुछ किया वह चिरस्मरणीय है; और आपने झांसी में अंग्रेजों का जैसा करारा मुकाबिला किया उसका वर्णन ही नहीं किया जा सकता है। हम लोग आपकी योजना को सिर-माथे रक्खेंगे आप अपना सहयोग देने की कृपा करती रहें और अपने प्रण का स्मरण रक्खें।

(रावसाहब विनम्र भाव से तलवार लक्ष्मीबाई को लौटाता है)

लक्ष्मीबाई— (तलवार को म्यान में डालती हुई) आप लोग किसी को अपना प्रधान सेनापति बनालें और राई-रत्ती उसकी आज्ञा का पालन करें जैसा अंग्रेज करते हैं।

सब—आगे ऐसा ही होगा।

बांदा का नवाब—हम लोग राव साहब को अपना प्रधान सेनापति बनाते हैं।

सब लोग—हां, राव साहब प्रधान सेनापति।

रावसाहब—मैं स्वीकार करता हूं।

लक्ष्मीबाई—अच्छा है काम ठिकाने से तो चले। नियम-संयम तो हो।

रावसाहब—आपको मैं लाल कुर्ती वाले ढाई सौ सवार देता हूं। वे पैदल भी लड़ सकते हैं। खूब सीखे-सिखाए हैं। अब आप युद्ध की योजना बतलाइये। ठीक उसी के अनुसार काम किया जायगा।

जाते हैं और उनको अपने अफ़सरों की आज्ञा का बिलकुल स्मरण नहीं रहता। कतारें बिगड़ जाती हैं और क्रम से खंड-खंड हो जाने से सारी योजना नष्ट हो जाती है।

रावसाहब—आगे ऐसा ही होगा। अब लड़ाई की योजना बतलाइये।

लक्ष्मीबाई—अभी नहीं। भोर होने पर बतलाऊँगी। तब तक अच्छी तरह सो लीजिये।

(लक्ष्मीबाई चली जाती है। वे एक दूसरे का मुंह ताकते रहते हैं)

दूसरा दृश्य

[स्थान—गोपालपुरा का एक बाग। समय दिन। रायसाहब और कई राजा तथा नवाब आते हैं। तात्या साथ में है।]

नवाब—कालपी की लड़ाई हारने का कारण सिवाय बुरी क़िस्मत के और कुछ हो ही नही सकता।

एक सरदार—अब इस स्थान पर या इसके आसपास लड़ाई नही हो सकती यह निश्चित है।

रावसाहब—किसी तरह नागपुर की ओर पहुँच पावें तो शीघ्र एक बड़ी सेना तैयार हो जाय। फिर जमकर लड़ सकते हैं।

एक राजा—शायद वहा को कोई अङ्गरेजी पल्टन हमसे आ मिले। रावसाहब, हमारा राज फिर क़ायम हो जाय तो देखे अंग्रेजों को।

रावसाहब—नागपूर पहुँच जाये तो महाराष्ट्र से बड़ी सहायता मिलेगी। तभी सबके गये हुये राज्य कायम होंगे।

तात्या—पहुँचा तो मैं दूगा वहाँ तक।

नवाब—पर बीच मे बेहिसाब अंग्रेज़ी पल्टनों और तोपों का सामना करना पड़ेगा। अपनी गांठ मे बड़ी तोपे बिलकुल नही है।

तात्या—हम लोगों को एक किला मिल जाय तो बहुत काम चले।

नवाब—ऐसा लगता है जैसे यहां पिजड़े में फँस गये हों।

रावसाहब—कोंच, कालपी या झांसी वापिस मिल जाय तो सब दिक्कतें दूर हो जायें।

एक राजा—राजपूताने की ओर चलिये।

रावसाहब—मेरा मन दक्षिण की ओर के लिये कहता है।

नवाब—समझ में नही आता कि क्या करें।

तात्या—रानी साहब से राय ली जाय?

रावसाहब—वे बहुत अच्छी सैनिक है और मैं उनकी क़दर करता हूं। परन्तु स्त्री ही है।

नवाब—इस पर भी उन्होंने दस महीने खूबी के साथ झांसी का राज्य किया। आंधी की तरह अंग्रेजों से लड़ीं! प्रजा उन पर कुरबान हो गई!!

रावसाहब—ठीक है, बिलकुल ठीक है! सलाह लेने में क्या हर्ज है? बुलालो, तात्या।

तात्या—मैं उनको बुला आया हूं। रात को आपने आज्ञा दी थी न?

रावसाहब—(हँसकर) रात की आज्ञा किसको याद रह सकती है? उस समय तो गहरी छनी थी। (पहरेदार आता है)

पहरेदार—रानी साहब आई है।

रावसाहब—उनको तुरन्त लिवा लाओ।

(पहरेदार जाता है और लक्ष्मीबाई को पहुँचाकर चला जाता है। परस्पर अभिवादन होता है।)

लक्ष्मीबाई—कहिए, क्या तै किया आप लोगों ने।

रावसाहब—सोचते है क्या किया जाय अब?

लक्ष्मीबाई—

रावसाहब—

लक्ष्मीबाई

नवाब—करे

लक्ष्मीबाई—न ।

रावसाहब—तब फिर और कौन सा ?

नवाब—और कोई किला है ही नहीं !

बाकी सब—फिर किसे कहां से आवें ?

} एक साथ.

लक्ष्मीबाई—ग्वालियर का ।

रावसाहब—ग्वालियर का !

नवाब—ग्वालियर का !!

लक्ष्मीबाई—हां ग्वालियर का । वही सबसे निकट है ।

रावसाहब—परन्तु,—

लक्ष्मीबाई—किन्तु परन्तु कुछ नहीं । ग्वालियर पर तुरन्त आक्रमण कर देना चाहिये । राजा लड़का है । दीवान और वहां के केवल दो तीन सरदार अंग्रेजों के पक्षपाती हैं जनता । और सेना साथ देगी; सेना साथ भी न देगी तो हलचल अवश्य रहेगी । ग्वालियर में बनी-बनाई, सजी-सजाई बढ़िया तोपें, गोले, गोली, सैकड़ों मन बारूद, अन्य प्रकार की बहुत सामग्री तथा अटूट कोष है ।

नवाब—रानी साहब ठीक कहती है ।

एक राजा—हिम्मत कर जाना चाहिए ।

लक्ष्मीबाई—वही स्थान सबसे बड़े सुभीते का भी है । वहां जल्दी जल्दी घुमाई फिराई जाने वाली हलकी तोपें भी बहुत हैं । भारी तोपें एक जगह से दूसरी जगह कठिनाई के साथ हटा पाई जाती हैं । मैदान की लड़ाई के लिए हलकी छोटी तोपें अत्यन्त आवश्यक हैं । अंग्रेजों का कालपी की लड़ाई के जीतने का एक कारण उनके हाथ मे इन छोटी तोपों का होना भी था । वे उनको रणक्षेत्र में चाहे जहां ले जाते थे ।

रावसाहब—बिलकुल ठीक है बाई साहब ! धन्य है आपकी सूझ को !! ग्वालियर पर तुरन्त धावा बोल देना चाहिये !!!

लक्ष्मीबाई—इसी घड़ी नहीं । पहले तात्या को भेज दीजिये । जब ये वहां से सब ठीक-ठाक करके लौटे तब तुरन्त............

रावसाहब—बहुत अच्छा तात्या तुम इसी पल यहां से जाओ।

तात्या—(प्रसन्न होकर) अभी जाता हूँ। मुझको आशा है कि हम लोग ग्वालियर को पा जायंगे।

एक राजा—अब मुझको भी आशा है कि मेरा राज्य भी मुझको वापिस मिल जायगा।

लक्ष्मीबाई—अपने राज्य की चिन्ता नही, जनता के सुख की ओर ध्यान दीजिये।

रावसहाब—एक ही बात है बाई साहब, एक ही बात है।

(तात्या जाता है)

लक्ष्मीबाई—मै अपने सरदारों और सिपाहियों का काम देखने जाती हूँ। उनके कपड़ों का भी कुछ प्रबन्ध करना है। (जाती हैं)

रावसहाब—अपने को भी कुछ काम है। है न नवाब साहब ?

नवाब—हां, बहुत जरूरी। (उछलकर देखता है कि लक्ष्मीबाई दूर निकल गई या अभी पास ही है) महारानी साहब चली गई। तो रावसहाब, अब हां ! एक बार गहरी छन जाय। फिर कसम है। ग्वालियर का किला हाथ में कर लेने के बाद ही दम लेगे।

रावसहाब—यही तो मै कहना चाहता था। अभी लड़ाई तो कोई लड़नी नही है जो न पी जाय।

एक राजा—चलिये उधर बगीचे में। वहाँ किसी तरह की विघ्न बाधा नहीं है। (वे सब जाते हैं)

चौथा दृश्य

[स्थान—ग्वालियर के बाहर की ऊबड़ खाबड़ भूमि। दो किसान आते हैं वे कुल्हाड़ियां लिए है और बग़लों में थोड़ी सी लकड़ी ! समय—दिन।]

एक—बचकर निकल चलो, कही पेशवा की फ़ौज वाले अपनी यह थोड़ी सी लकड़ी न छीन लें। जरा दम ले लो और खिसको।

दूसरा—हाँ गदरी भी खूब मचाते हैं सब लोग ! उस दिन शहर लूट लिया होता इन्होंने । झाँसी वाली रानी अपने सवारों को लेकर आ गई और पेशवा ने भी कुछ रोकथाम की, नहीं तो ये लोग सारी बस्ती को जला डालते । दीवान दिनकर राव, गणपत राव और सर्दार माहूरकर की कोठियाँ तो उन लोगों ने जला ही डालीं । तुमने नहीं सुना?

पहला—हाँ सुना और बाद को देखा भी । हमारे महाराज बिचारे आगरा भाग गये । ग्वालियर को तजकर जाना पड़ा । अब तो बाम्हनों की बन पड़ी है । इतना अंधाधुंध खाया, इतना कि सरदार और वहीं बड़े-बड़े आदमियों तक को नहीं मिलता । हम लोगों को तो तमाखू तक नहीं मिल पाती । न जाने यह गड़बड़ कब मिटेगी ।

दूसरा—अरे बहुत से तो बाम्हन बीमार पड़ गये हैं और कोई तो मर तक गये हैं ।

पहला—मरेंगे ही । इन्ही की तो बन पड़ी है । हमारे राजा का सारा खजाना इन्हीं लोगों पर लुटाया जा रहा है ; या गवैयों, भाँड़-भगतियों और रंडियों पर । इन लोगों का सुराज यही तो है ! मौका पाया और बन गये सरदार । पागोट धर लिए सिर पर, गहने डाल लिये गले में और पहिन लिये चमकीले कपड़े । बस लगे पीटने जग भर में ढोल, हमने त्याग किये हैं ! हमारे पुरखो ने सिर कटवाये हैं !!! हमने ग़रीबों के लिये क्या कर रक्खा है ?

दूसरा—हम लोगो के लिये तो वही वेट-बेगार, दिन भर मजदूरी, और रात को अध पेटे सो जाना ।

पहला—भाग्य है भाई अपना भाग्य । भगवान ने बाम्हन बनाया होता तो श्रीखण्ड और लड्डू खाने से ही उकास न मिलता ।

दूसरा—तो बीमार पड़ के मर जाता रे! अधपेटे रहते हैं तो किसी की चोरी चपाटी तो नहीं करते ! किसी का फोकट में तो नहीं खाते !!

पहला—ये राजा लोग अपने अपने राज बनाने में जुटे हुये हैं असल में—

दूसरा—झांसी वाली रानी को छोड़कर। वे किसान मजदूरों को बहुत चाहती हैं। उनकी रखवाली करती हैं। तभी झांसी के किसान, मजूर और छोटी-बड़ी जात के सब लोग उनके लिये कट मरे। फिरंगियों के दाँत खट्टे कर दिये उन सब ने।

पहला—वे नौलखा बाग़ में ठहरी हुई हैं। बस उन्हीं के सिपाहियों का उत्पात नही सुना। (नेपथ्य में शोर होता है)

दोनों—चलो, कोई पल्टन वाले हैं। भागो। (वे दोनों जाते हैं)

पाँचवाँ दृश्य

[स्थान—ग्वालियर के फूल बाग का महल। महल के भीतर के एक बड़े कमरे में बड़ी सजावट और जगमगाहट है। राव-साहब का तिलक हो गया है। उसको अब पेशवा का पद मिल गया है। एक ऊँचे मन्च पर सिंहासन लगा हुआ है। मन्च के नीचे, दोनों ओर, कुर्सियों पर सरदार बैठे हुए हैं। पेशवा का दरबार है। इस दरबार में लक्ष्मीबाई या उनका कोई सरदार नहीं है। समय—दिन।]

(नेपथ्य में)—श्रीमन्त पन्त प्रधान श्री पेशवा बहादुर की जय ! सवारी आ रही है ! सावधान !! सावधान!!! सावधान !!!!

(रावसाहब पारिषदों के साथ आता है। दो तरफ़ चंवर वाले हैं। पीछे उसके सिर पर एक सेवक भड़कीली छत्री ताने हुए है। रावसाहब कानों में मोतियों के चौकड़े, गले में मोती जवाहरों के कंठे डाले हुए हैं। कपड़े उसके बहुत तड़क-भड़कदार हैं। सिर पर मुकुट है। उसके आते ही सरदार खड़े होकर झुक-झुककर प्रणाम करते हैं। जैसे ही वह सिंहासन पर जाता है ब्राह्मण मंगल-ध्वनि करते हैं)

रावसाहब—(मंगल ध्वनि की समाप्ति पर) सुना है कि ब्राह्मणों को श्रीखण्ड और लड्डुओं के लिए शक्कर नही मिल रही है। चाहे जितने दाम क्यों न खर्च हों, कही से भी शक्कर इकट्ठी की जानी चाहिए।

[illegible] श्रीमन्त [illegible]
[illegible] । इसमें [illegible] नहीं है और न [illegible] भी सन्देह ।

कई सरदार— [illegible], श्रीमन्त सरकार ।

रावसाहब— [illegible] पूरी और [illegible] भी [illegible] न होने पावे । [illegible] लेकर [illegible] ।

कई सरदार— [illegible], श्रीमन्त सरकार ।

रावसाहब—समाचार मिला है कि अंग्रेज कई दिशाओं से मिलकर ग्वालियर पर आक्रमण करने वाले हैं । वे सबों की आहुतियों में स्वाहा कर दिये जायेंगे । ([illegible]) हमारे सदा आशीर्वाद देने वाले ब्राह्मण [illegible] कहते हैं कि एक ब्राह्मण यदि एक-एक लड्डू भी अंग्रेजों पर फेंक देंगे तो उनके सिरों पर लड्डुओं का विन्ध्याचल पर्वत खड़ा हो जायगा और वे सब दब कर मर जायेंगे ।

(सब हँसते हैं)

रावसाहब— अपनी तपस्या इन दिनों यही होना चाहिए कि कोई भी ब्राह्मण दान-दक्षिणा और लड्डू भोजन से वंचित न रहने पाये । दूर दूर के और भी ब्राह्मणों को भी बुलाया जावे ।

कई सरदार—बुलाए गये हैं और बुलाए जा रहे हैं ।

एक सरदार आगे बढ़ कर—श्रीमन्त एक विनती है ।

रावसाहब— हा हा कहो ।

वही सरदार— मेरे मौसेरे भाई का साला मुरार की लड़ाई में बेतरह लड़ा, इतना कि न उसका पता है और न उसके घोड़े का । उसके वंश में कोई नहीं है मुझको पुरस्कार मिलना चाहिए !

रावसाहब—कहीं भाग तो नहीं गया ?

सरदार—(विश्वास के साथ) नहीं श्रीमन्त सरकार ।

रावसाहब—पुरस्कार मिलेगा ।

दूसरा सरदार—मुरार की लड़ाई में मेरा भाई गोली खाकर मरा । मुझको जागीर मिलनी चाहिये ।

रावसाहब—मिलेगी। अच्छा, अब थोड़ी देर ताना रीरी और छुम छुम हो जाय। इसके बाद फिर और कुछ।

सब—हां, सरकार (गायिकाएँ आती हैं और नृत्यगान करती हैं)

❀ गीत ❀

सुमन तुम हिलते क्यों रहते हो
पंखुरी खोल खोल कर,
किसको अपना रंग दिखलाते ?
पवन लहर के संग सिमटकर,
खिलते और खिलाते,
फूल तुम खिलते क्यों रहते हो
सुमन तुम हिलते क्यों रहते हो

(गाकर एक ओर खड़ी हो जाती हैं)

रावसाहब—तात्या इनको पुरस्कार देकर विदा करो। ग्वालियर के और भी जितने कलावन्त हैं उन सबको निहाल कर दो। वे भी याद करते रहेंगे कि किसी का राज हुआ था और है।

तात्या—जो आज्ञा, श्रीमन्त सरकार।

रावसाहब—और सिपाहियों को खजाने से और भी रुपया बाँट दो, इतना कि वे अघा जायें।

तात्या—जो आज्ञा श्रीमन्त सरकार। सेना की तैयारी का आयोजन ? अंग्रेजी सेना आने वाली है।

छटवाँ दृश्य

[स्थान—ग्वालियर क़िले के दक्षिण पूर्व की ओर ऊँची-नीची भूमि पर बाबा गङ्गादास की कुटी। समय संध्या के पूर्व। बाबा गङ्गादास कुटी में आते हैं। और चले जाते हैं।]

(नेपथ्य में - घोड़ों की टापों का शब्द होता है। फिर लक्ष्मीबाई का स्वर—'मुन्दर' घोड़ों को इसी पेड़ से बांध दे। बाबा जी की कुटी वह रही।).

(लक्ष्मीबाई और मुन्दर आती हैं)

लक्ष्मीबाई—बाबाजी, हम लोग प्यासी हैं।

(नेपथ्य से—'अच्छा ठहरो')

(बाबा गङ्गादास तूम्बी में जल लाते हैं। बाबा एक वयोवृद्ध, परन्तु तेजस्वी पुरुष हैं। लक्ष्मीबाई और मुन्दर उनको प्रणाम करती हैं। वे थोड़ा-सा सिर हिलाते हैं और उनको जल पिलाकर बैठने का संकेत करते हैं। वे दोनों नीचे बैठ जाती हैं।)

लक्ष्मीबाई—मैं आपसे कुछ पूछने आई हूँ। मेरा मन अशान्त है। आपके उत्तर से शान्ति मिलने की आशा है।

बाबा गङ्गादास—मैं रामभजन के सिवाय और कुछ नही जानता।

लक्ष्मीबाई—आप टाल नहीं सकेंगे। बतलाना होगा। आपने अकेले अपने मन को शान्त कर लिया तो क्या हुआ? हमलोगों को भी तो शान्ति दीजिये।

बाबा गङ्गादास—पूछो बेटी, यदि समझ में आ जायगा तो बतला दूंगा।

लक्ष्मीबाई—यहा थोड़े दिनो में भीषण युद्ध होने वाला है। आप की कुटी का स्थान रक्षित नही है। किसी सुरक्षित स्थान में न चले जाइये?

बाबा गङ्गादास—सुरक्षित है। बात पूछो।

लक्ष्मीबाई—इस देश को स्वराज्य कैसे प्राप्त होगा?

बाबा गङ्गादास—इस प्रश्न का उत्तर तो राजा लोग दे सकते है।

लक्ष्मीबाई—नही दे सकते, तभी आपसे पूछने आई हूँ।

बाबा गङ्गादास—जैसे प्राप्त होता आया है वैसे ही होगा।

लक्ष्मीबाई—कैसे बाबाजी?

बाबा गङ्गादास—सेवा, तपस्या और बलिदान से।

लक्ष्मीबाई—हम लोग स्वराज्य कैसे स्थापित कर पावेगे?

बाबा गङ्गादास—गड्ढे कैसे भरे जाते है? नीव कैसे भरी जाती है? एक पत्थर गिरता है, फिर दूसरा, फिर तीसरा चौथा, इसी प्रकार

और। तब उसके ऊपर भवन खड़ा होता है। नीव के पत्थर भवन को नही देख पाते परन्तु भवन खड़ा होता है उन्हीं के बल-भरोसे पर जो नीव में गड़े हुये हैं। वह गड्ढा या नींव एक पत्थर से तो भरी नही जाती। और, न एक दिन में।

लक्ष्मीबाई—हमलोगों के जीवन-काल में स्वराज्य स्थापित हो जायगा, बाबा जी ?

बाबा गङ्गादास—यह मोह क्यों, बेटी ? पहले से आरम्भ किए हुए काम को ही तो बढ़ा रही हो न ? दूसरे लोग आयेंगे। वे इसको बढ़ाते जायंगे। अभी तो कसर है। स्वराज्य स्थापना के आदर्शवादी अपने अपने छोटे राज्य वनाकर बैठ जाते हैं। जनता को त्रास देते हैं। जनता और उनके बीच का अन्तर नही मिटता। और जनता के ही भीतर परस्पर कितना भेद है—ऊँच-नीच, छूतछात। जब ये अन्तर और भेद मिट जायँ और रोजा लोग अपनी टीमटाम तथा बिलासप्रियता को छोड़कर जनता के वास्तव में सेवक बन जायं तब स्वराज्य सम्भव होगा।

लक्ष्मीबाई—सम्पत्ति वालों की स्वार्थ-प्रियता और विलास-भावना को देखकर मन टूट-टूट जाता है। फिर भी क्या हम लोग प्रयत्न करती रहें ?

गङ्गादास—अवश्य। आतातताइयों का नाश करके पहले स्वराज्य की पटली स्वच्छ करो। फिर कुछ हो पायगा। तुम तो भगवान कृष्ण और गीता की भक्त हो ?

लक्ष्मीबाई—आपने कैसे जाना ?

बाबा गङ्गादास—(मुस्कराकर) लोग कहते हैं। झांसी की रानी को कौन नहीं जानता ? (गम्भीर होकर) देखो बेटी, गीता में निराशा के लिए रञ्चमात्र भी स्थान नही है। निराश लोगों के लिए उसमें अमृत के मन्त्र हैं।

मुन्दर—महाराज, हमारी सरकार हम लोगों को कभी कभी गीता की बातें समझाया करती हैं।

लक्ष्मीबाई—[illegible] [illegible] ... [illegible]।

सुन्दर—सरकार समझती हैं। सरकार निश्चिन्त रहें। [illegible]।

लक्ष्मीबाई—बाबा गङ्गादास की कुटी का पता जानती हो मुन्दर?

सुन्दर—सरकार।

जूही—सरकार, मैंने अभी [illegible] [illegible] नहीं [illegible] थी। [illegible] लड़ाई में सब के अरमान निकलेंगी।

लक्ष्मीबाई—अवश्य, [illegible]। (ऊपर की ओर देखकर) भगवान मेरी उन सखियों [illegible] सेना [illegible] में ही रह गई है!

जूही—सरकार, [illegible] [illegible] समर हो गई।

लक्ष्मीबाई—हाँ, ठीक कहती हो। ([illegible]) अभी [illegible] भी नहीं है। अभी तो ग्वालियरवालों [illegible] की बहुत बड़ी आशा है। [illegible]। यदि उन लोगों का नशा उतर गया हो और यदि राव साहब पेशवाई राजसिंहासन से उतर कर योग्य बनने योग्य हो गए हों तो अपनी योजना उनके गले उतार पाऊँ।

(लक्ष्मीबाई जाती है। पीछे पीछे मुन्दर और जूही)

आठवाँ दृश्य

[स्थान—ग्वालियर के बाहर का रण क्षेत्र। कुछ दूरी पर पीछे ग्वालियर का किला, सोनरेखा नाला और बाबा गंगादास की कुटी-झांई सी-दिखलाई पड़ती है। इधर-उधर दूरी पर टौरियों की ऊंची नीची पांतें। पूर्व-उत्तर के कोने पर खुला हुआ मैदान। दोनों ओर से युद्ध हो रहा है। अभी सूर्योदय नहीं हुआ है। पौ फटने वाली ही है। सन् १८५८ की अठारहवी जून है। एक कोने में छोटा सा तम्बू है। उसके सामने सैनिक वेश में मुन्दर आती है। वह कान लगाकर कुछ सुनती है। कुछ क्षण बाद लक्ष्मीबाई का स्वर सुनाई पड़ता है—)यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत। (फिर गुनगुनाहट सुनाई पड़ती है)................ संभवामि युगे युगे। मुन्दर मेरा

घोड़ा कल की लड़ाई में घायल हो गया है। बिना विलम्ब के दूसरा ले आ। मैंने नींद खुलने पर देखा, वह काम नहीं दे सकेगा।

मुन्दर—जो आज्ञा सरकार। कल की लड़ाई में इस घोड़े ने विजय दी थी, आज की में दूसरा देगा।

(नेपथ्य से लक्ष्मीबाई)—सरदारों को भेजदे। मैं तैयार हो रही हूँ।

मुन्दर—बहुत अच्छा सरकार।

(मुन्दर जाती है। जूही सैनिक वेश में आती है। उसने केशों को फूलों से सजाया है। अपना कुला साफ़ा हाथ में लिये है)

(नेपथ्य से लक्ष्मीबाई)—पहरे पर कौन है ?

जूही—मैं हूँ सरकार, जूही।

(नेपथ्य से लक्ष्मीबाई)—कर्नल जूही। अच्छा मैं आ रही हूँ।

जूही—(प्रसन्न होकर गाते हुए)

उन मुस्कानों की बलि जाऊँ

सती चिता की दीप शिखा पर जो लहराती रहती हैं,
निबलों के भी कण कण में जो ज्योति जगाती हूँ,
बलिदानों की—

(सैनिक वेश में लक्ष्मीबाई का प्रवेश। वे लाल कुर्ती के अफ़सर की वर्दी पहिने हुए हैं। गले में हीरे मोतियों का कण्ठा है और दोनों ओर तलवारें)

लक्ष्मीबाई—अरी क्या यह जाने का समय है ? (फूलों की ओर मुस्कराहट भरा संकेत करके) ओहो, कर्नल साहब को आज फूल सजाने की सूझी है ! (हंसकर) कहाँ मिल गए री तुझको इतने फूल ?

जूही—(हंसकर) आज, सरकार, फूलों की महक और देश की मुक्ती का मिलन जो होना है।

लक्ष्मीबाई—(जूही की पीठ पर हाथ फेर कर) देख, पागल मत हो जा। तेरे फूल और हंसने को देखकर मेरे मन में खुटका होता है। सिपाही में वीरता से भी अधिक शान्ति और धीरज होना चाहिए।

लक्ष्मीबाई उस कटोरे को ओठों के निकट ले जाती है, दूरी पर बिगुल का शब्द होता है।)

लक्ष्मीबाई—(कान लगाकर) यह अंग्रेजों की बिगुल है, मुन्दर!

(उसी समय तोप चलने का शब्द होता है और गोले के सन्नाने का)

लक्ष्मीबाई—यह अंग्रेजों की तोप का गोला है।

(कटोरा फेंक देती है)

लक्ष्मीबाई—मुन्दर हर हर महादेव। चल, आज बराबर मेरे साथ रहना।

(उसी समय सूर्योदय होता है जिससे उनका कंठा दमक उठता है)

मुन्दर—हर हर महादेव! सरकार के साथ छाया की तरह रहूंगी।

(लक्ष्मीबाई म्यान से तलवार खीच लेती है। मुन्दर भी। तलवारें सूर्य की किरणों से चमक उठती हैं। वे दोनों जाती हैं। दोनों ओर से तोपे और बन्दूकें चलती हैं। नेपथ्य में लड़ाई का कोलाहल होता है। घोड़ों की टापें सुनाई पड़ती हैं और दौड़ने भागने के शब्द। सिपाही आते और चले जाते हैं। इनके बाद राव साहब और उसका एक साथी आते हैं)

रावसाहब—तात्या को खबर दो कि हमारा मोर्चा बिगड़ गया। रियासती सिपाही अंग्रेजों से जा मिले हैं।

(वह जाता है। उसके बाद घबराहट में रावसाहब। इसके उपरान्त कुछ अङ्गरेज़ सिपाही आते हैं। उनके पीछे-पीछे कुछ हिन्दुस्थानी सिपाही। दोनों दल लड़ते हुये चले जाते हैं। ऐसा कई बार होता है। कभी वे भाग पड़ते हैं और कभी ये। नेपथ्य में—'सरकार, जूही तलवार से लड़ते लड़ते मारी गई।' नेपथ्य से—ओफ! मुन्दर, सावधान होकर लड़ना।' अङ्गरेज़ों का 'हुर्रा' घोष सुनाई पड़ता है कुछ हिन्दुस्तानी सैनिक भागते हुए आते हैं, उनके पीछे कुछ अङ्गरेज़ संगीनें चढ़ाये हुए। इनके पीछे लक्ष्मीबाई के लाल-कुर्ती सैनिक। वे सब लड़ते लड़ते आते जाते रहते हैं। सन्ध्या का समय हो रहा है)

(नेपथ्य में)—रावसाहब का मोर्चा बिलकुल उखड़ गया है। तात्या कहां है ? तात्या कहां है ?

(नेपथ्य में)—वह अंग्रेजों के व्यूह को बेध कर निकल गया है।

लाल कुर्ती का एक सैनिक—(दूसरे से) वह देखो सामने महारानी साहब को कुछ गोरे सवारों ने घेर लिया है।

(नेपथ्य में पिस्तौल चलने का शब्द होता है)

मुन्दर के कण्ठ से निकलता है—बाई साहब मैं मरी।

लाल कुर्ती वाला सैनिक—ओफ़ चलो ! बचाओ उन्हें। मुन्दर मारी गई !!

(वे जाते हैं। उनके पीछे कुछ गोरे संगीन बरदार आते हैं।)

एक—हां हां वही तो है ! देखो, वही तो है मोतियों के कंठे वाला सरदार। इसको पकड़ना या मारना है।

दूसरा—चलो, पर उस सरदार ने अपने दो गोरों को मार दिया है होशियारी के साथ चलो।

(नेपथ्य में—लक्ष्मीबाई का स्वर)—रघुनाथसिंह, उसको संभालो ! गोरे उसका शरीर न छूने पावें !!

(गोरे सैनिक जाते हैं। उनके पीछे कुछ हिन्दुस्थानी सैनिक गोरे सैनिकों से घिरे हुए लड़ते हुए आते हैं।)

(नेपथ्य में) - बाई साहब के पेट में संगीन की हूल लग गई है। ओफ़ !!

(नेपथ्य में पिस्तौल चलने का शब्द होता है। रानी लक्ष्मीबाई का शब्द—हूं,—मैं स्वराज्य की नीव का पत्थर होने जा रही हूं।)

एक गोरा सैनिक—ओह ! उधर चलो।

(वे लड़ते लड़ते जाते हैं। कुछ घायल गोरे कराहते हुये आते हैं। नेपथ्य में पिस्तौल का शब्द।)

(नेपथ्य में रघुनाथसिंह का स्वर—संभालो देशमुख, रानी साहब घोड़े पर से गिर रही हैं।)

रघुनाथसिंह— महारानी साहब का गांठा मृत सिपाहियों के घर वालों को बांट देना या उनका चाहे जो कुछ करना। दामोदरराव को राजरानी के साथ लेकर तुरन्त दक्षिण की ओर जाना और उनकी आज्ञा का पालन करना। यह उनका चिन्ह है।

देशमुख—तुम यहां क्या करोगे ?

रघुनाथसिंह—मैं ? मैं बन्दूक भरके कहीं जा बैठता हूँ। जब तक शव बिलकुल भस्म न हो जायेंगे मैं शत्रुओं को बन्दूक की मार से भगाता रहूँगा—और यहीं समाप्त हो जाऊँगा।

(रामचन्द्र देशमुख दामोदरराव को लेकर जाता है)

रघुनाथसिंह—(गुलमुहम्मद से) आप क्या करेंगे ? आप भी जाइये।

गुलमुहम्मद— अम कहाँ जायगा ? यह अमारा मुलक है। (चिता की ओर संकेत करके) यह अमारा मालिक है। अम फकीर हो जायगा और इनके हड्डी पर चबूतरा बांध कर रखवाली करेगा। उस पर फूल चढाता रहेगा।

रघुनाथसिंह—हूँ। अच्छा।

बाबा गङ्गादास—ओम शान्ति, शान्ति, शान्ति !

(तीनों आकाश की ओर आंखें करते हैं)

(नेपथ्य में शोर होता है—'झांसी की रानी कहां है ?' किसी के कंठ से निकलता है—'वही सबसे श्रेष्ठ और सबसे अधिक वीर थी।)
('अमर रहे झांसी की रानी' के साथ यवनिका धीरे धीरे गिरती है।)

॥❀॥ यवनिका ॥❀॥

मृगनयनी

★

श्री वृन्दावनलाल वर्मा का अति विख्यात उपन्यास

तथ्य और कल्पना का बेजोड़ समन्वय

चार बड़े पुरस्कार

इस उपन्यास पर एक साथ

★

१. हरजीमल डालमियां
पुरस्कार—२१०१) रु०

२. साहित्यकार संसद (प्रयाग का
श्री साहू जगदीशप्रसाद
पुरस्कार—१०००) रु०

३. उत्तर प्रदेश सरकार का साहित्य
पुरस्कार—१०००) रु०

४. मध्यभारत सरकार का साहित्य
कला सम्बन्धी सर्वश्रेष्ठ
पुरस्कार—१०००) रु०

द्वितीय-संस्करण

२८ पौण्ड के चिकने उत्तम कागज पर आकर्षक छपाई

तिरंगा आवरण | पांच चित्र | पांच सौ पृष्ठ

सजिल्द मूल्य—पांच रुपया

मयूर-प्रकाशन, झांसी।